उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम

कक्षा XII

Part -III

हिंदी

ऐच्छिक

केरल सरकार

शिक्षा विभाग

2015

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in
e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
To be printed in quality paper - 80gsm map litho (snow-white)
© Department of Education, Government of Kerala

वक्तव्य

प्रिय मित्र,

बारहवीं कक्षा की हिंदी की ऐच्छिक पाठ्यपुस्तिका आपके हाथों में है। जैसे कि आप जानते हैं, हिंदी भारत की संपर्क भाषा एवं राजभाषा है। इसी कारण से हिंदी भाषा पर अधिकार पाना हर भारतीय के लिए गर्व की बात है। बारहवीं कक्षा की इस पाठ्यपुस्तक के माध्यम से हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं से आपका परिचय दृढ़ होगा। मेरा पूरा भरोसा है कि भविष्य में भी हिंदी में अधिक से अधिक उपाधियाँ अर्जित करके आप देश के अच्छे भविष्य निर्माण में एक नागरिक का कर्तव्य निभाएँगे।

डॉ. एस रवींद्रन नायर

निदेशक,

राज्य शैक्षिक अनुसंधान

एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

TEXT BOOK DEVELOPMENT TEAM

Members

Sreekumaran B, GHSS Parambil, Kozhikode
Dr. Pramod P, DB HSS Thakazhy, Alappuzha
Dr. N I Sudheesh Kumar, BNV V&HSS Thiruvallam, Thiruvananthapuram
Smitha S L, Govt. Tamil HSS Chalai, Thiruvananthapuram
Ullas Raj, HDPS HSS Edathirinji, Thrissur
Prasanth K V, St. Joseph Boys HSS, Kozhikode
Abdussamed V, GR HSS Kottakkal, Malappuram
Harish Babu B, Oriental HSS Thirurangadi, Malappuram
Dr. Sasidharan Kuniyil, GHSS Palayad, Kannur
Lalu Thomas, St.Xaviers HSS, Chemmannar, Idukki
Dr.Bindulekha.T, GHSS Kuttiyadi, Kozhikode
Sudhakaran Pillai.R, GGHSS, Thazhava, Kollam
Dr.Binu.D, GHSS Mangad, Kollam

Experts

Dr. H Parameswaran, Rtd. Principal, University College, Thiruvananthapuram

Dr. N Suresh, Hon. Director, Centre for Translation Studies, University of Kerala

Dr. B Asok, Head of the Department, Govt. Brennen College, Thalassery

Prof. R I Santhi, Associate Professor, Govt. College for Women, Thiruvananthapuram

Lay-Out

Haridas M A
Irinjalakuda

Academic Co-ordinator

Dr. Rekha R Nair, Research Officer, SCERT

State Council of Educational Research and Training(SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram - 695 012.

पन्नों से गुज़रें ...

इकाई एक

यादों की बारात में ....7 - 36

अलबम .... 9 - 21
कहानी *सुदर्शन*

सरोज-स्मृति ....22 - 24
कविता *सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*

खोई हुई वस्तु की खोज .... 25 - 30
निबंध *लक्ष्मीकांत झा*

क्रिया विशेषण ....31 - 32
व्याकरण

साहित्य का इतिहास .... 33 - 36

इकाई दो

भविष्य की दुनिया में.. 37 - 59

राजभाषा और राष्ट्रभाषा .... - 39 - 47
निबंध *नंददुलारे वाजपेयी*

अनुवादः कला और कौशल .... 48 - 50
अनुवाद

साँप... 51 - 52
कविता *अज्ञेय*

संबंध बोधक .... 53 - 54
व्याकरण

साहित्य का इतिहास .... 55 - 59

इकाई तीन

अतीत के सपनों में .... 60 - 86

एक अंतरंग परिचय .... 62 - 68

जीवनी *सुलोचना रांगेय राघव*

दो हाथियों की लड़ाई .... 69 - 73

कविता *उदय प्रकाश*

वास्तव में घर एक पाठशाला है .... 74 - 79

डायरी *रामदरश मिश्र*

समुच्चय बोधक .... 80 - 81

व्याकरण

साहित्य का इतिहास .... 82 - 86

इकाई चार

आस की चुप्पी में .... 87 - 105

विरोधाभास .... 89 - 92

कविता *सच्चिदानंदन*

नगर की नाक के नीचे .... 93 - 100

व्यंग्य कहानी *रामनारायण उपाध्याय*

विस्मयादि बोधक .... 101 - 102

व्याकरण

साहित्य का इतिहास .... 103 - 105

अतिरिक्त वाचन सामग्री .... 106 - 136

इकाई - 1

यादों की बारात में

बारहवीं कक्षा की ऐच्छिक पुस्तक की पहली इकाई है यादों की बारात में। सुदर्शन की कहानी अलबम से इकाई शुरू होती है। इसमें दो ईमानदार व्यक्तियों का चित्रण हुआ है। कहानी परोपकार की भावना को उजागर करती है। इकाई का दूसरा पाठ हिंदी के शोकगीत सरोजस्मृति का मर्मस्पर्शी अंश है। निराला की यह लंबी कविता पुत्री के प्रति पिता के अनन्य प्रेम को दिखाती है। तीसरा पाठ लक्ष्मीकांत झा का निबंध है। खोई हुई वस्तु पुनः मिल जाने पर प्राप्त होनेवाली खुशी इसका केंद्रबिंदु है। आगे का पाठ क्रियाविशेषण के सही प्रयोग को समझाने की कोशिश है। इकाई का अंतिम पाठ हिंदी साहित्य की आधुनिक कालीन कविता यात्रा तथा निबंध यात्रा की विहंगम दृष्टि है।

अधिगम उपलब्धियाँ

- प्रेमचंदयुगीन कहानी-साहित्य की अवधारणा पाकर शैलीगत विशेषताएँ पहचानता है।
- प्रेमचंदयुगीन कहानी-साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों के आधार पर कहानी का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।
- कहानी के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- छायावादी काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों की अवधारणा पाकर कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।
- निबंध की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है।
- निबंध के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- क्रिया-विशेषण का प्रयोग संबंधी अवधारणा पाकर प्रयोग करता है।
- हिंदी साहित्य के गद्‌यकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ पहचानकर प्रस्तुत करता है।

अलबम

पंडित शादीराम ने ठंडी साँस भरी और सोचने लगे - क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा?

वे निर्धन थे; परंतु दिल के बुरे न थे। वे चाहते थे कि चाहे जिस प्रकार भी हो, अपने यजमान - लाला सदानंद - का रुपया अदा कर दें। उनके लिए एक-एक पैसा मोहर के बराबर था। अपना पेट काटकर बचाते थे; परंतु जब चार पैसे इकट्ठे हो जाते, तो कोई ऐसा खर्च निकल आता कि सारा रुपया उड़ जाता। शादीराम के हृदय पर बर्छियाँ चल जाती थीं। उनका वही हाल होता था, जो उस डूबे हुए मनुष्य का होता है, जो हाथ-पाँव मारकर किनारे पहुँचे, और किनारा टूट जाए। उस समय उसकी दशा कैसी करुणाजनक, कैसी हृदय-बेधक होती है? वह प्रारब्ध को गालियाँ देने लगता है। यही दशा शादीराम की थी।

इसी प्रकार कई वर्ष बीत गए। शादीराम ने पैसा-पैसा बचाकर अस्सी रुपए जोड़ लिए। उन्हें लाला सदानंद के पाँच सौ रुपए देने थे। इस अस्सी रुपए की रकम से ऋण उतरने का समय निकट आता प्रतीत हुआ। आशा धोखा दे रही थी। एकाएक उनका छोटा लड़का बीमार हुआ और लगातार चार महीने बीमार रहा। पैसा-पैसा करके बचाए हुए रुपए दवा-दारू में उड़ गए। पंडित शादीराम ने सिर पीट लिया। अब चारों ओर फिर अंधकार था। उसमें प्रकाश की हल्की-सी किरण दिखाई न देती थी। उन्होंने ठंडी साँस भरी और सोचने लगे- क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा?

लाला सदानंद अपने पुरोहित की विवशता को जानते थे, और न चाहते थे कि वे रुपए देने का प्रयत्न करें। उन्हें इस रकम की रत्ती-भर भी परवाह न थी। उन्होंने उसके लिए कभी तगादा तक नहीं किया, न कभी शादीराम से इस विषय की बात छेड़ी। इस बात से वे इतना डरते थे, मानो रुपए स्वयं उन्हीं को देने हों; परंतु शादीराम के हृदय में शांति न थी! प्रायः सोचा करते थे कि वे कैसे भले-मानस हैं, जो अपनी रकम के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते? खैर, वे कुछ नहीं करते, सो ठीक है; परंतु इसका तात्पर्य यह थोड़े ही है कि मैं भी निश्चिंत हो जाऊँ।

उन्हें लाला सदानंद के सामने सिर उठाने का साहस न था। उसे ऋण के बोझ ने नीचे झुका दिया था। यदि लाला सदानंद ऐसी सज्जनता न दिखलाते, और शादीराम को

बराबर तगादा करके तंग करते, तो उन्हें ऐसा मानसिक कष्ट न होता। हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं, परंतु भलेमानसी के सामने आँखें नहीं उठतीं।

हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं। परंतु भलेमानसी के सामने आँखें नहीं उठतीं। अपना विचार व्यक्त करें।

एक दिन लाला सदानंद किसी काम से पंडित शादीराम के घर गए, और उनकी अलमारी में कई सौ बंगला, हिंदी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं की मासिक पत्रिकाएँ देखकर बोले, "यह क्या है?"

पंडित शादीराम ने पैर के अंगूठे से ज़मीन कुरेदते हुए उत्तर दिया, "पुरानी पत्रिकाएँ हैं। बड़े भाई को पढ़ने का बड़ा चाव था, वे प्रायः मंगवाते रहते थे! जब जीते थे, तब किसी को हाथ तक न लगाने देते थे। अब इन्हें कीड़े खा रहे हैं!"

"रद्दी में क्यों नहीं बेच देते?"

"इनमें चित्र हैं। जब कभी बच्चे रोने लगते हैं, तो एकाध निकालकर दे देता हूँ। इससे उनके आँसू थम जाते हैं।"

लाला सदानंद ने आगे बढ़कर कहा, "दो-चार परचे दिखाओ तो।"

पंडित शादीराम ने कुछ परचे दिखाए। हरेक परचे में कई-कई सुंदर और रंगीन चित्र थे। लाला सदानंद कुछ देर तक उलट-पुलटकर देखते रहे। सहसा उनके हृदय में एक विचित्र विचार उठा। चौंककर बोले, "पंडितजी!"

"कहिए?"

"ये चित्र कला-सौंदर्य के अति उत्तम नमूने हैं। अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाएँ, तो हज़ार, दो हज़ार रुपए कमा लो।"

पंडित शादीराम ने एक ठंडी साँस लेकर कहा, "ऐसे भाग्य होते, तो यों धक्का न खाता फिरता।"

लाला सदानंद बोले, "एक काम करो।"

"क्या?"

"आज बैठकर, इन पत्रिकाओं में जितनी अच्छी-अच्छी तस्वीरें हैं, सबको छाँटकर अलग कर लो।"

"बहुत अच्छा।"

"जब यह कर चुकोगे, तो मुझे बता देना।"

"आप क्या करेंगे?"

"मैं इनका अलबम बनाऊँगा, और तुम्हारी ओर से विज्ञापन दे दूँगा। संभव है किसी शौकीन के हाथ पड़ जाए और तुम चार पैसे कमा लो।"

2

पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोयलों में हीरा मिल जाएगा। घोर निराशा ने आशा के द्वार चारों ओर से बंद कर दिए थे। वे उन हतभाग्य मनुष्यों में से थे, जो संसार में असफल, और केवल असफल रहने के लिए उत्पन्न होते हैं।

सोने को हाथ लगाते थे, तो वह भी मिट्टी हो जाता था। उनकी ऐसी धारणा ही नहीं, पक्का विश्वास था कि यह प्रयत्न कभी भी सफल न होगा, परंतु लाला सदानंद के आग्रह से दिन-भर बैठकर तस्वीरें छाँटते रहे। न मन में लगन थी, न हृदय में चाव; परंतु लाला सदानंद की बात को टाल न सके। शाम को देखा, दो सौ एक-से-एक बढ़िया चित्र हैं। उस समय उन्हें देखकर वे स्वयं उछल पड़े। उनके मुख पर आनंद की आभा नृत्य करने लगी, जैसे फेल हो जाने का विश्वास करके अपने प्रारब्ध पर रो चुके विद्यार्थी को पास हो जाने का तार मिल गया हो। उस समय वह कैसा प्रसन्न होता है। चारों ओर कैसी विस्मित और प्रफुल्लित दृष्टि से देखता है! यही अवस्था पंडित शादीराम की थी। उन चित्रों की ओर इस प्रकार देखते थे मानो उनमें से प्रत्येक दस-दस रुपए का नोट हो। बच्चों को उधर देखने न देते थे। वे सफलता के विचार में ऐसे प्रसन्न हो रहे थे, जैसे सफलता प्राप्त हो चुकी हो, यद्यपि वह अभी कोसों दूर थी। लाला सदानंद की आशा उनके मस्तिष्क में निश्चय का रूप धारण कर चुकी थी।

लाला सदानंद ने चित्रों को अलबम में लगवाया, और कुछ उच्चकोटि के समाचार पत्रों में विज्ञापन दे दिया। अब पंडित शादीराम हर समय डाकिए की प्रतीक्षा करते रहते थे। रोज़ समझते कि आज कोई चिट्ठी आवेगी। दिन बीत जाता और कोई उत्तर न आता था। रात को आशा सड़क पर धूल की तरह बैठ जाती थी; परंतु दूसरे दिन लाला सदानंद की बातों से टूटी हुई आशा फिर बंध जाती थी, जिस प्रकार

गाड़ियाँ चलने से पहले दिन की बैठी हुई धूल हवा में उड़ने लगती है। आशा फिर अपना चमकता हुआ मुख दिखाकर दरवाज़े पर खड़ा कर देती थी। डाक का समय होता, तो बाज़ार में ले जाती, ओर वहाँ से डाकखाने पहुँचाती थी। इसी प्रकार एक महीना बीत गया; परंतु कोई पत्र न आया। पंडित शादीराम सर्वथा निराश हो गए, परंतु फिर भी कभी-कभी सफलता का विचार आ जाता था, जिस प्रकार अंधेरे में जुगनू चमक जाता हैं। यह जुगनू की चमक निराश हृदयों के लिए कैसी जीवनदायिनी, कैसी हृदयहारिणी होती है ! इसके सहारे भूले हुए पथिक मंज़िल पर पहुँचने का प्रयत्न करते और कुछ देर के लिए अपना दुःख भूल जाते हैं। इस झूठी आशा के अंदर सच्चा प्रकाश नहीं होता; परंतु यह दूर के संगीत के समान मनोहर अवश्य होती है। इसमें वर्षा की नमी हो या न हो, परंतु इससे काली घटा का जादू कौन छीन सकता है?

आखिर एक दिन शादीराम के भाग्य जागे। कलकत्ता के एक मारवाड़ी सेठ ने पत्र लिखा कि अलबम भेज दो, यदि पसंद आ गया, तो खरीद लिया जाएगा। मूल्य की कोई चिंता नहीं, चीज़ अच्छी होनी चाहिए। यह पत्र उस करवट के समान था, जो सोया हुआ मनुष्य जागने से पहले बदलता है और उसके पश्चात् उठकर बिस्तरे पर बैठ जाता है। यह किसी पुरुष की करवट न थी। यह भाग्य की करवट थी। पंडित शादीराम दौड़े हुए लाला सदानंद के पास पहुँचे, और उन्हें पत्र दिखलाकर बोले, “भेज दूँ?”

लाला सदानंद ने पत्र को अच्छी तरह देखा और उत्तर दिया, "रजिस्टर्ड कराकर भेज दो। शौकीन आदमी है, खरीद लेगा।"

"और मूल्य?"

"लिख दो, एक हज़ार रुपए से कम पर सौदा न होगा।"

कुछ दिन बाद उन्हें उत्तर में एक बीमा मिला। पंडित शादीराम के हाथ-पैर काँपने लगे; परंतु हाथ-पैरों से अधिक उनका हृदय काँप रहा था। उन्होंने जल्दी से लिफाफा खोला; और उछल पड़े। उसमें सौ-सौ रुपए के दस नोट थे। पहले उनके भाग्य ने करवट ली थी, अब वह पूर्ण रूप से जाग उठा। पंडित शादीराम खड़े थे, बैठ गए। सोचने लगे, अगर दो हज़ार रुपए लिख देता तो शायद उतने ही मिल जाते। इस विचार ने उनकी सारी प्रसन्नता किरकिरी कर दी।

उनकी सारी प्रसन्नताओं के किरकिरी हो जाने का कारण क्या था?

3

संध्या के समय वे लाला सदानंद के पास गए, और पाँच सौ रुपए के नोट सामने रखकर बोले, "परमात्मा को धन्यवाद है कि मुझे इस भार से छुटकारा मिला। अपने रुपए सँभाल लीजिए। आपने जो दया और सज्जनता दिखलाई है, उसे मैं मरणपर्यंत न भूलूँगा।"

लाला सदानंद ने विस्मित होकर पूछा, "पंडितजी, क्या सेठ ने अलबम खरीद लिया?"

" जी हाँ रुपए भी आ गए।"

"एक हज़ार?" "जी हाँ ! नहीं तो मुझ निर्धन ब्राह्मण के पास क्या था, जो आपका ऋण चुका देता, परमात्मा ने मेरी सुन ली...!"

"मैं पहले भी कहना चाहता था; परंतु कहते हुए हिचकिचाता था कि आपके हृदय को कहीं ठेस न पहुँचे। पर अब मुझे यह भय नहीं है; क्योंकि रुपए आपके हाथ में हैं। मेरा विचार है कि आप ये रुपए अपने पास ही रखें। मैं आपका यजमान हूँ; मेरा धर्म है कि आपकी सेवा करूँ।"

पंडितजी की आँखों में आँसू आ गए, दुपट्टे से पोंछते हुए बोले, "आप जैसे सज्जन संसार में बहुत थोड़े हैं। परमात्मा आपको चिरंजीवी रखे, परंतु अब तो मैं ये रुपए न लूँगा। इतने वर्ष आपने माँगे तक नहीं, यह उपकार कोई थोड़ा नहीं है ! मुझे उससे उऋण होने दीजिए। ये पाँच सौ रुपए देकर मैं हृदय की शांति खरीद लूँगा।"

निर्धन ब्राह्मण की उदारता और सच्चरित्रता देखकर सदानंद का मनोमयूर नाचने का क्या कारण है?

निर्धन ब्राह्मण की यह उदारता और सच्चरित्रता देखकर सदानंद का मनोमयूर नाचने लगा। उन्होंने नोट ले लिए। मनुष्य रुपए देकर भी ऐसा प्रसन्न हो सकता है, इसका अनुभव उन्हें पहली ही बार हुआ। पंडितजी के चले जाने पर उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं, और किसी विचार में मग्न हो गए। इस समय उनके मुखमंडल पर एक विशेष आत्मिक तेज था।

4

छह मास बीत गए। लाला सदानंद बीमार थे। ऐसे बीमार वे सारी आयु में न हुए थे। पंडित शादीराम उनके लिए दिन-रात माला फेरा करते। वे वैद्य न थे, डॉक्टर न थे, वे ब्राह्मण थे, उनकी औषधि माला फेरनी ही थी, और यह काम वह अपनी आत्मा की पूरी शक्ति, अपने मन की पूरी श्रद्धा से करते थे। उन्हें औषधि की अपेक्षा आशीर्वाद और प्रार्थना पर अधिक भरोसा था।

एक दिन लाला सदानंद चारपाई पर लेटे थे। उनके पास उनकी बूढ़ी माँ उनके दुर्बल और पीले मुख को देख-देखकर अपनी आँखों के आँसू अंदर ही अंदर पी रही थीं। थोड़ी दूर पर, एक कोने में उनकी नवोढ़ा स्त्री घूँघट निकाले खड़ी थी, और देख रही थी कि कोई काम ऐसा तो नहीं जो रह गया हो। पास में पड़ी हुई एक चौकी पर पंडित शादीराम बैठे रोगी को भगवद्गीता सुना रहे थे।

एकाएक लाला सदानंद बेसुध हो गए।

पंडितजी ने गीता छोड़ दी, और उठकर उनके सिरहाने बैठ गए। स्त्री गरम दूध लेने के लिए बाहर दौड़ी, और माँ अपने बेटे को घबराकर आवाज़ें देने लगीं। इस समय पंडितजी को रोगी के सिरहाने के नीचे कोई कड़ी-सी चीज़ चुभती हुई जान पड़ी। इन्होंने नीचे हाथ डालकर देखा तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। यह सख्त चीज़ वही अलबम

था, जिसे किसी सेठ ने नहीं, बल्कि स्वयं लाला सदानंद ने खरीद लिया था।

शादीराम का ऋण पहले से दूना कैसे हो गया?

पंडित शादीराम इस विचार से बहुत प्रसन्न थे कि उन्होंने सदानंद का ऋण उतार दिया है; परंतु यह जानकर उनके हृदय पर चोट-सी लगी कि ऋण उतरा नहीं; पहले से दूना हो गया।

उन्होंने अपने बेसुध यजमान के पास बैठे-बैठे एक ठंडी साँस भरी और सोचने लगे - क्या यह ऋण कभी न उतरेगा?

कुछ देर बाद लाला सदानंद को होश आया। उन्होंने पंडितजी से अलबम छीन लिया; और धीरे से कहा, "यह अलबम सेठ साहब से अब हमने मँगवा लिया है।"

पंडितजी जानते थे कि यजमानजी झूठ बोल रहे हैं; परंतु वे उन्हें पहले की अपेक्षा अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और अधिक ऊँचा समझने लगे थे।

सुदर्शन

सुदर्शन का वास्तविक नाम बदरीनाथ है। उनका जन्म सियालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में 1896 को हुआ था। उनकी कालजयी रचनाएँ हैं 'हार की जीत', 'सच का सौदा', 'परिवर्तन', 'गुरु मंत्र', 'अंधकार', 'दिल्ली का अंतिम दीपक' आदि। सुदर्शन प्रेमचंद परंपरा के कहानीकार हैं। मध्यवर्ग की सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं का विश्लेषण करने में आपको अपूर्व सफलता प्राप्त हुई है। 'सुदर्शन-सुधा', 'सुदर्शन सुमन', 'तीर्थयात्रा' इत्यादि संग्रहों में आपकी कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। उनका निधन 1967 को हुआ था।

मेरी खोज

- पाठभाग के किन्हीं दो विशेष प्रयोग छाँटें और नए संदर्भ में उनका प्रयोग करें।

अनुवर्ती कार्य

- लाला सदानंद के ये कथन पढ़ें,
  - अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाए, तो हज़ार दो हज़ार रुपए कमा लो।
  - मैं आपका यजमान हूँ, मेरा धर्म है कि आपकी सेवा करूँ।
  - यह अलबम सेठ साहब से अब हमने मँगवा लिया है।
- इन कथनों के आधार पर लाला सदानंद के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

- लाला सदानंद अलबम की बिक्री के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापन देता है। वह विज्ञापन तैयार करें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
सपाट भाषा का प्रयोग है			
मुहावरेदार/नारेबाज़ी शैली है			
लाभ और गुणवत्ता का ज़िक्र है			
रूपरेखा आकर्षक है।			

- शादीराम जानता था कि यजमानजी झूठ बोल रहे हैं। परंतु वे उन्हें पहले की अपेक्षा अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और अधिक ऊँचा समझने लगे थे। पंडितजी की उस दिन की डायरी लिखें।

सहायक संकेत

- अलबम सिरहाने पर देखना
- सेठ के प्रति बढ़ता आदर
- कर्ज़ न चुका सकने पर आत्मग्लानि

प्रसंगार्थ

मोहर	-	सोने का सिक्का
परवाह	-	ध्यान, चिंता
निश्चिंत	-	चिंता रहित
भले मानस	-	अच्छा आदमी
रद्दी	-	काम न आनेवाली चीज़
परचा	-	पन्ना
चाव	-	रुचि
शौकीन	-	शौक रखने वाला
कोयला	-	Coal
हीरा	-	रत्न
छाँटना	-	काटकर अलग करना
करवट	-	दाएँ और बाएँ लेटने की स्थिति
आभा	-	शोभा, चमक
सौदा	-	व्यापार
छुटकारा	-	मुक्ति
चौकी	-	कुर्सी, छोटा तख्त
दूना	-	दुगुना

विशेष प्रयोग

ठंडी साँस भरना	-	दुःख की लंबी साँस भरना, आह भरना
अदा करना	-	चुकाना
बर्छियाँ चल जाना	-	अधिक दुःख हो जाना
तगादा करके तंग करना	-	माँग करके उपद्रव करना
ज़मीन कुरेदना	-	ज़मीन खोदना
आँसू थम जाना	-	आँसू रुक जाना, आँसू बंद हो जाना
टाल न सका	-	हटा न सका
ठेस पहुँचाना	-	चोट पहुँचाना
धक्का खाना	-	आघात लगना

सरोज स्मृति

फिर आई याद - "मुझे सज्जन
है मिला प्रथम ही विद्वज्जन
नवयुवक एक, सत्साहित्यिक
कुल कान्यकुब्ज, यह नैमित्तिक
होगा कोई इंगित अदृश्य,
मेरे हित है हित यही स्पृश्य
अभिनंदनीय।" बँध गया भाव
खुल गया हृदय का स्नेह-स्राव,
खत लिखा, बुला भेजा तत्क्षण,
युवक भी मिला प्रफुल्ल, चेतन।
बोला मैं- 'मैं हूँ रिक्त-हस्त
इस समय, विवेचन में समस्त-
जो कुछ है मेरा अपना धन
पूर्वज से मिला, करूँ अर्पण
यदि महाजनों को तो विवाह
कर सकता हूँ, पर नहीं चाह
मेरी ऐसी, दहेज देकर
मैं मूर्ख बनूँ यह नहीं सुघर,
बारात बुलाकर मिथ्या व्यय
मैं करूँ नहीं ऐसा सुसमय।
तुम करो ब्याह, तोड़ता नियम
मैं सामाजिक योग के प्रथम,
लग्न के; पढ़ूँगा स्वयं मंत्र
यदि पंडितजी होंगे स्वतंत्र
जो कुछ मेरे, वह कन्या का,
निश्चय समझो, कुल धन्या का।'

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

सरोज-स्मृति हिंदी साहित्य का शोक गीत है। अपनी प्रियपुत्री सरोजा की असामयिक मृत्यु पर निराला की हृदयभेदक व्यथा कविता के रूप में निकली। खुद निराला बड़े दानी थे। ज़रूरतमंदों को वे बिन माँगे पैसा देते थे। परंतु अपनी बेटी की बीमार हालत में धन के अभाव में वे कुछ न कर सके। प्रस्तुत कविता में वे बार-बार पुकार उठे - "धन्ये! मैं पिता निरर्थक था। कुछ भी तेरे हित न कर सका।" प्रस्तुत भाग में अपनी बेटी के लिए वर खोजनेवाले एक पिता का दृश्य है।

छायावाद के चार स्तंभों में से एक, नवगीत के प्रवर्तक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' थे। उनका जन्म 1896 ई में मिथिनापुर, बंगाल में हुआ था। कबीर के बाद हिंदी के सबसे क्रांतिकारी कवियों में उनका स्थान है। प्रकृति के प्रति समभावना और सर्वहारा के प्रति समानुभूति उनकी कविताओं की विशेषता रही। प्रमुख रचनाएँ- 'परिमल', 'गीतिका', 'अणिमा', 'सांध्यकाकली', 'अपरा', 'राम की शक्तिपूजा', 'सरोज स्मृति' आदि हैं। उनका निधन 1961 ई में हुआ था।

मेरी खोज

- कविता से तत्सम शब्द छाँटकर लिखें।

अनुवर्ती कार्य

- आस्वादन-टिप्पणी तैयार करें।
- "पर नहीं चाह
  मेरी ऐसी, दहेज देकर
  मैं मूर्ख बनूँ" - यहाँ कवि की प्रगतिशील विचारधारा प्रकट होती है। लेकिन आज भी दहेज की समस्या समाज का शाप है। इसपर संगोष्ठी चलाएँ और आलेख तैयार करें।

एक नज़र

हिंदी के बहुचर्चित क्रांतिकारी कवि हैं, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'। बेटी की शादी के संबंध में कवि के मन में यह दुविधा पैदा हुई थी कि परंपरा के अनुसार वर को ढूँढ़ना है या विद्‌वान को चुनना है। आखिर कवि ने विद्‌वान को बुलाया और उनसे कहा 'मैं परंपरा के अनुसार दहेज नहीं देना चाहता हूँ'। कवि की आर्थिक स्थिति भी इसके अनुकूल नहीं है। कवि सभी सामाजिक परंपराओं और नियमों का अतिक्रमण करने केलिए तैयार हो जाते हैं और उन्होंने यह भी कहा कि मेरी पुत्री वंश की गरिमा बढ़ाएगी।

प्रसंगार्थ

विद्‌वज्जन	-	पंडित
चेतन	-	चुस्त
रिक्त	-	खाली
महाजन	-	धनी
दहेज	-	वरदक्षिणा, Dowry
सुघर	-	अच्छा
बारात	-	वर-यात्रा

खोई हुई वस्तु की खोज

मेरी वस्तुएँ बहुधा खो जाती हैं। लोग कहते हैं, तुम बड़े असावधान हो, इसलिए तुम्हारी वस्तुएँ खोती रहती हैं। यदि तुम थोड़ा सावधान रहो, अपनी वस्तुओं को ठिकाने से सहेजकर रखो तो तुम्हें जब देखो तब चिंतित न होना पड़े।

मैं मानता हूँ कि कभी-कभी वस्तु के खो जाने से विशेष कष्ट होता है। कभी-कभी भोज में जी खोलकर भोजन करने से अपच भी हो जाता है। फिर भी हम भोजन को ठूँसना नहीं छोड़ते। इसी प्रकार हम खो जाने के भय से वस्तुओं को ठिकाने से रखने की चिंता नहीं करते। आपने 'सौ वर्ष जीने का' अथवा 'अमर होने' का उपाय किसी-न-किसी पुस्तक में अवश्य पढ़ा होगा। आपने विचार करके देखा होगा कि अमर होने के लिए मनुष्य को ऐसे उपायों का अवलंबन करना पड़ेगा कि उसका जीवन ही भार-सा हो जाएगा। मुझे यदि उन उपायों का पालन साल-भर भी करना पड़े तो मैं आत्महत्या करने पर उतारू हो जाऊँ, फिर सौ वर्ष अथवा अनंत काल तक जीने की तो बात ही छोड़ दीजिए। हाँ, तो आप जिस प्रकार इन पुस्तकों में वर्णित दीर्घायु-प्राप्ति के उपायों की चेष्टा नहीं करते, उसी प्रकार मैं भी अपनी वस्तुओं को संभालने के विषय में उपदेश सुनकर भी नहीं सुनता।

लेखक अपनी वस्तुओं को संभालने के विषय में उपदेश सुनकर भी नहीं सुनता, क्यों?

जो लोग ऐसे उपदेश देते हैं, उनपर मुझे दया आती है, क्रोध नहीं। पर कुछ लोग हैं जिनपर मुझे क्रोध आता है। उदाहरण लीजिए: आप कार्यालय अथवा कॉलेज जा रहे हैं। ठीक चलते समय सहसा आप देखते हैं कि जेब में पेंसिल नहीं है। आपने अपनी कोठरी में ढूँढ़ना आरंभ किया। बड़ी चौकसी-से अपनी कोठरी का कोना-कोना छान डाला। इसी समय आपका पुत्र या भाई आकर पूछता है:

'क्या ढूँढ़ रहे हैं?'

'पेंसिल ढूँढ़ रहा हूँ।

'जेब में नहीं है क्या?'

अब आप ही सोचिए कि जेब में पेंसिल रहने पर चारपाई के नीचे घुसकर कोई थोड़े ही पेंसिल ढूँढ़ता है। वह फिर कहता है, 'मेज़ पर देखो'

यदि इस बात पर भी आपको क्रोध न आए तो आप संसार में रहने योग्य नहीं है। आप कुछ बोलना ही चाहते हैं कि आपकी आँख घड़ी पर पड़ती है। आप देखते हैं कि बहुत विलंब हो गया है। ऐसे समय विवाद करना अच्छा नहीं। इसी समय पुत्र या भाई किसी काम से बाहर जाता है। आप पेंसिल के ढूँढ़ने का भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। दो मिनट के पश्चात् पुत्र या भाई आकर फिर पूछता है, 'अब भी पेंसिल नहीं मिली?'

आप इस बार भी क्रोध को दबाए रहे । फिर दूसरा प्रश्न 'कहीं कोट में तो नहीं रही? उसे तो अम्मा ने धोबी के यहाँ भेज दिया।'

'नहीं, मैंने आज, नहीं अभी, आधा घंटा पहले उससे लिखा है। बैंजनी रंग की पेंसिल थी। चार आने की थी।'

'अरे, ठीक याद आया। उसे मैं पानी में भिगोकर टीका लगाने ले गया था। अभी लाया।' यह कहकर पुत्र या भाई चला जाता है। ऐसे समय आपके मन की दशा कैसी होगी, यह आप स्वयं अनुमान कर ले।

एक बार मैंने नई पुस्तक मोल ली। दूसरे दिन घर का कोना-कोना छान डाला। रसोई-घर भी न छोड़ा। घर-भर के सभी लोगों ने हलचल मचा दी। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कई दवातें उड़ेल दीं, औषधि की शीशियाँ फोड़ दीं, जिन पत्रों का उत्तर देना रह गया था, उन्हें पुरानी चिट्ठियों में और जो पुरानी थीं उन्हें नई चिट्ठियों में मिला दिया; पुस्तकों की पेटियों में कपड़े और कपड़े की पेटियों में पुस्तकें डाल दीं। सब कुछ किया, पर पुस्तक न मिली। परीक्षा निकट थी। फिर दूसरी पुस्तक मोल लेने लपका। कुछ दूर जाने पर मन में आया कि एक बार फिर घर में जाकर खोज आऊँ। लौट आया। ऊधम और हलचल फिर दूसरी बार हुई। अंत में निराश होकर फिर दुकान गया। पुस्तक-विक्रेता ने कहा, 'वाह! आप भी बड़े विचित्र जीव हैं। कल पुस्तक ली थी, दाम दिए और पुस्तक यहीं छोड़कर चलते बने।'

यह सुनकर मेरे मन में जो प्रसन्नता हुई उसके लिए मैं कुछ रुपए भी व्यय करने को प्रस्तुत-सा हो गया।

'मैं कुछ रुपए भी व्यय करने को प्रस्तुत-सा हो गया' लेखक ऐसा क्यों सोचता है?

लेखक किसी नए नगर में जाते वक्त पथ-प्रदर्शक को क्यों नहीं लेते हैं?

जब आप किसी नए नगर में जाते हैं, तब अपने साथ पथ-प्रदर्शक ले सकते हैं, अथवा गलियों में भटकते हुए चक्कर काट सकते हैं। मुझे तो चक्कर काटना ही भाता है। ऐसा करने में आपको कुछ परिश्रम अवश्य पड़ेगा पर दिन-भर अपने डेरे के दस ही पग आगे से बीसों बार निकल जाने के पश्चात् सहसा अपने निवास स्थान पर पहुँचने में कितना आनंद होता है, इसे सब नहीं जानते। दूसरा लाभ यह है कि कुछ भटकने से आपको नगर भी देखने को मिल जाता है। मैंने बहुधा देखा है कि किसी खोई वस्तु को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कोई पहले की खोई हुई वस्तु भी मिल जाती है। उस समय मन में कितना आनंद होता है! इस आनंद का अनुभव सभी लोग नहीं कर सकते। जिनके यहाँ सभी काम नियम और क्रम से होते हैं, जो अपने घर की सभी वस्तुओं पर कारागार के बंदियों की नाई संख्या देकर रखते हैं, उनके लिए तो यह आनंद असंभव ही है।

यह आनंद इसलिए नहीं होता कि खोई हुई वस्तु के बिना हमारा काम नहीं चलता, अथवा वह मूल्यवती होती है। एक बार एक सज्जन ने मुझसे डाकघर से फाउंटेनपेन ले लिया। इसके पश्चात् वे मुझे आज तक कहीं दीख भी न पड़ें। फाउंटेनपेन के लिए मुझे दुख तो अवश्य हुआ, पर उससे कहीं अधिक दुख उसके कारण मित्र खो जाने से हुआ। नई पेंसिल खो जाने से अधिक दुख होता है। यदि मुझे वह फाउंटेनपेन मिल भी जाए तो उतना आनंद न होगा, जितना किसी खोई पेंसिल के मिलने से

होता है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि डाकघर से निकलते ही मैंने फाउंटेनपेन की आशा छोड़ दी, पर खोई हुई वस्तु के लिए तो 'जब तक साँस तब तक आस' रहती है।

'जब तक साँस तब तक आस' इससे क्या तात्पर्य है?

यदि आपने कभी इस अनुभव का आनंद नहीं लिया तो एक बार अवश्य परीक्षा करके देखिए।

- लक्ष्मीकांत झा

मेरी खोज

- निम्नलिखित कथन किसका है?
  - पेंसिल ढूँढ़ रहा हूँ।
  - अब भी पेंसिल नहीं मिली?
  - अभी आधा घंटा पहले उससे लिखा है।
  - उसे मैं पानी में भिगोकर टीका लगाने ले गया था।
  - वाह! आप भी बड़े विचित्र जीव हैं।

अनुवर्ती कार्य

- खोई हुई पुस्तक लेखक को दुकान में मिली। दुकानदार और लेखक के बीच में हुए संभावित वार्तालाप तैयार करें।
- मान लें, पुस्तक खो जाने और मिलने की घटना को लेकर परीक्षा के बाद लेखक अपने मित्र के नाम पत्र लिखता है। वह पत्र तैयार करें।

प्रसंगार्थ

ठिकाने से	-	Arrangement
सहेजना	-	सँवारना, to put in order
अपच	-	अजीर्ण
ठूँसना	-	कसकर भरना, to cram
चौकसी	-	सतर्कता, सावधान
बैंजनी	-	बैंगनी
टीका लगाना	-	तिलक लगाना
हलचल मचाना	-	शोर मचाना
छान डालना	-	तलाश करना
फोड़ना	-	तोड़ना
लपकना	-	दौड़ना
भटकना	-	इधर-उधर घूमते फिरना
डेरा	-	टिकाव, camp
की नाई	-	के समान
आस	-	कामना, आशा

क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं उसे क्रिया विशेषण कहते हैं। इसके चार भेद हैं -

स्थान वाचक, काल वाचक, रीतिवाचक, परिमाण वाचक

स्थान वाचक

- स्थिति - पास, दूर, भीतर, यहाँ, कहाँ, आस-पास...
- दिशा - आगे, पीछे, सामने, दाहिने, इधर, उधर...

काल वाचक

- समयवाचक - आज, कल, कभी-कभी तत्काल, बार-बार
- अवधिवाचक - सदा, नित्य, हमेशा
- पौनःपुन्यवाचक - फिर, पुनः, प्रायः

रीतिवाचक

- प्रकार बोधक - ऐसे, वैसे, जैसे
- निश्चय बोधक - ज़रूर, अवश्य
- अनिश्चय वाचक - शायद, कदाचित
- कारण बोधक - क्यों, इसलिए
- अवधारण - यहाँ तक, अब तक, सिर्फ
- निषेध वाचक - नहीं, मत, कभी
- प्रश्न वाचक - क्यों, कहाँ, कैसे

परिमाणवाचक

- अति, अत्यंत, थोड़ा, बहुत

अनुवर्ती कार्य

- ‘अलबम’ कहानी से क्रिया की विशेषता प्रकट करनेवाले शब्दों को रेखांकित करें।

  जैसे : उधर देखने, पश्चात् उठाकर, नहीं करते, इतना डरते

- रेखांकित शब्दों को सही खंभे में भरें।

स्थिति और दिशा को सूचित करनेवाले शब्द	समय, अवधि और पौनः को सूचित करनेवाले शब्द	प्रकार, निश्चय, अनिश्चय, कारण, अवधारण, निषेध और प्रश्न को सूचित करनेवाले शब्द	मात्रा को सूचित करनेवाले शब्द
स्थान वाचक	काल वाचक	रीति वाचक	परिमाण वाचक

साहित्य का इतिहास

हिंदी साहित्य का आधुनिक युग खड़ीबोली गद्‌य के विकास-संस्कार और विविध प्रयोगों का युग है। प्रतिभाओं ने अभिव्यक्ति के लिए नए-नए रूपों और प्रयोगों को जन्म दिया। पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से इन विधाओं को अधिक बढ़ावा मिला। कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र आदि विधाओं में पर्याप्त रचनाएँ हुईं। इसलिए इस काल को पंडित रामचंद्र शुक्ल ने 'गद्‌य काल' कहा। खड़ीबोली हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए 1805 ई. में फोर्ट विलियम कालेज में भाषा विभाग खोला। लल्लूलाल और सदल मिश्र के नेतृत्व में खड़ीबोली गद्‌य को शिक्षा का माध्यम बनाने की कोशिश की गई। लल्लूलाल ने 'प्रेमसागर', 'बैताल पच्चीसी', 'सिंहासन बत्तीसी' नामक ग्रंथों से, सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' से, इंशा अल्लाखाँ 'रानी केतकी की कहानी' से, मुंशी सदा सुखलाल 'सुखसागर' से खड़ीबोली हिंदी का श्रेय बढ़ाने लगा। ईसाई मिशनरियों ने भी 'बाइबिल' का अनुवाद करके, छापा खाना खोलकर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राजा राममोहन राय का 'ब्रह्मसमाज' स्वामी दयानंद सरस्वती के 'आर्यसमाज' का भी विशेष योगदान रहा। 'सत्यार्थ प्रकाश' खड़ीबोली गद्‌य की क्षमता का प्रमाण है। राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद', और राजा लक्ष्मण सिंह ने भी खड़ीबोली गद्‌य के विकास में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। स्वतंत्रता-आंदोलन की

मुख्य भाषा का गौरव खड़ीबोली हिंदी को ही मिला था। साहित्यिक-सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी गद्य के स्वरूप को निखारने और नव-जागरण की चेतना को साधारण जनता तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हुआ।

भारतेंदु युग

भारतेंदु के आगमन के साथ हिंदी गद्य का एक नया युग आरंभ होता है, जिसे हिंदी साहित्य का आधुनिक काल कहते हैं। बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' आदि इस काल के प्रमुख और उल्लेखनीय साहित्यकार हैं। भारतेंदु ने नाटक, जीवनी, यात्रा विवरण, निबंध, समालोचना आदि अधिकांश विषयों पर अपनी लेखनी सफलता पूर्वक चलाई है।

द्विवेदी युग

खड़ीबोली गद्य के विकास के इतिहास में महावीर प्रसाद द्विवेदी का प्रमुख स्थान है। उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से सुरुचिपूर्ण, परिष्कृत तथा व्याकरण सम्मत भाषा पर समुचित ज़ोर दिया। इस युग में निबंध के साथ कहानी, उपन्यास, आलोचना आदि महत्वपूर्ण गद्य विधाओं का भी पूर्ण विकास हुआ। पद्मसिंह शर्मा, सरदार पूर्ण सिंह, श्यामसुंदरदास, पद्मलाल पुन्नालाल बख़्शी, प्रेमचंद, रामचंद्र शुक्ल आदि अनेक महत्वपूर्ण गद्यकार हैं।

छायावाद और छायावादोत्तर युग

हिंदी गद्य के विकास में छायावादी कवियों का योगदान भी पर्याप्त महत्वपूर्ण है। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा,

रामकुमार वर्मा आदि ने गद्य को लाक्षणिक मूर्तिमता से युक्त कर नई भंगिमा प्रदान की। प्रगतिवादी -प्रयोगवादी और स्वातंत्र्योत्तर युग में हिंदी गद्य का बहुमुखी विकास हुआ है। जैनेंद्र, अज्ञेय के चिंतनप्रधान और पाश्चात्य भंगिमा से प्रभावित गद्य एक तरफ़ है तो दूसरी तरफ़ हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की गद्य शैली है जो संस्कृत साहित्य की छटा के साथ लोक जीवन के सहज प्रवाह को समाहित किए हुए हैं। इस परंपरा को बढ़ाने में विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवेकी राय आदि गद्य लेखकों का विशेष योगदान है।

निबंध साहित्य

तमाम साहित्य-विधाओं के बीच निबंध ही सबसे विलक्षण है। निबंध सबसे लचीली विधा है जिसकी सीमाएँ अन्य विधाओं में छायांतरित होती हैं। ऑक्सफोर्ड कोश में निबंध को 'शैली की दृष्टि से बहुत कुछ विस्तारपूर्ण, किंतु परिसर की दृष्टि से सीमित रचना' कहा गया है।

वस्तुत: हिंदी में निबंध का विकास पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित होकर हुआ। यही कारण है कि हिंदी निबंध भारतेंदु से पूर्व दिखलाई नहीं पड़ता।

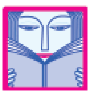

मेरी खोज

- आधुनिक हिंदी साहित्य के आरंभकालीन लेखक और उनकी रचनाओं को सूचीबद्ध करें।

  जैसे: लल्लूलाल - प्रेमसागर

- आधुनिक काल में विकसित विविध गद्य विधाओं को सूचीबद्ध करें।

अनुवर्ती कार्य

- आधुनिक काल के निबंध साहित्य पर टिप्पणी लिखें।
- आधुनिक काल गद्‌य काल कहा जाता है। इसपर परिचर्चा चलाएँ और आलेख तैयार करें ।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
उपक्रम है।			
सभी बिंदुओं को विकसित करके अपना मत प्रकट किया है।			
अपने मत का समर्थन किया है।			
उपसंहार है।			

प्रसंगार्थ

प्रशासक - प्रशासन करनेवाला, administrator

सहूलियत - सुविधा, convenience

छापा खाना - मुद्रणालय, press

छटा - सौंदर्य

लचीला - लचलचा, flexible

इकाई - 2

भविष्य की दुनिया में

दूसरी इकाई भविष्य की दुनिया में साहित्य के साथ साथ हिंदी के प्रयोजनमूलक पक्ष को भी उजागर करनेवाली है। इकाई का पहला भाग नंददुलारे वाजपेयी का निबंध 'राजभाषा और राष्ट्रभाषा' है। उन्होंने राजभाषा व राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के महत्व के बारे में अपना मत प्रकट किया है। दूसरी इकाई का अगला पाठ है– अनुवाद: कला और कौशल। भाषा एक सेतु है। अनुवाद से सांस्कृतिक तथा भाषाई सेतु का परिचय प्राप्त होता है। तीसरा पाठ अज्ञेय की कविता 'साँप' है। इसमें नगरी सभ्यता के विषैले वातावरण को प्रतीकात्मक रूप से अज्ञेय ने चित्रित किया है। चौथा पाठ 'संबंध बोधक' अव्यय से संबंधित है। पाँचवाँ पाठ हिंदी गद्‌य साहित्य की दो महत्वपूर्ण विधाओं- उपन्यास और कहानी का संक्षिप्त परिचय देता है।

अधिगम उपलब्धियाँ

- निबंध साहित्य की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर प्रस्तुत करता है।
- निबंध के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- अनुवाद की विशेषताओं की अवधारणा पाकर अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करता है।
- प्रयोगवादी कविता की प्रवृत्तियों पर चर्चा करके आस्वादन टिप्पणी लिखता है।
- संबंधबोधक की अवधारणा पाकर प्रयोग करता है।
- उपन्यास एवं कहानी साहित्य का शैलीगत एवं भाषागत अंतर पहचानकर आलेख तैयार करता है।

राजभाषा और राष्ट्रभाषा

मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आप सबको, जो यहाँ सैकड़ों की संख्या में उपस्थित हैं, हिंदी आती है। आप लोगों में सभी का हिंदी का समझना मेरे लिए अपार हर्ष का विषय है। मैं हिंदी के कार्य से देश के विभिन्न भागों में जाया करता हूँ और वहाँ की गतिविधि से प्राय: परिचित हूँ। परंतु इसके सुदूर दक्षिण प्रदेश में हम देखते हैं कि हिंदी विषय दसवें दर्जे तक अनिवार्य विषय बना है। इससे प्रतीत होता है कि यहाँ के अधिकारी कार्य-कर्तागण राजनीति के साथ ही शैक्षणिक विषयों पर भी अधिक ध्यान रखते हैं। इस प्रकार वे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कार्य तो करते ही हैं, पर देश के भविष्य के संबंध में भी उदासीन नहीं हैं। सभी देशों में जनता को महत्वपूर्ण तथा साधारण से साधारण कार्य के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता पड़ती है। यदि इस देश में विभिन्न प्रकार के भाषा-भाषी न होते और देश का विस्तार अधिक न होता तो एक या दो भाषाओं से काम चल सकता था। संभव यह भी था कि मध्यवर्तिनी या केंद्रीय भाषा की आवश्यकता ही न पड़ती। पर भारतवर्ष एक बड़ा देश है। इसके विभिन्न

भागों में कुल मिलाकर चौदह* बड़ी भाषाएँ प्रचलित हैं। इस विभिन्नता में सर्वसाधारण को आपस में कार्य करने और एक-दूसरे को समझने के लिए माध्यम की आवश्यकता है। इस प्रदेश में इसकी तैयारी पहले से ही है। आपको इस कार्य के लिए मैं बधाई देता हूँ। साथ ही मेरी यह अभिलाषा है कि इस प्रदेश के अनुकरण पर दूसरे प्रदेशों में भी ऐसी ही परंपरा बन जाए।

प्रश्न उठता है और आप भी पूछ सकते हैं कि हिंदी को ही अंतर्प्रदेशीय भाषा क्यों बनाया जाए? क्या अन्य भाषाओं में यह योग्यता नहीं है ? क्या उन्हें राजभाषा का पद नहीं दिया जा सकता ? मित्रो, किसी भी भाषा को राजभाषा का पद देने के पूर्व हमें सोचना होगा कि उसकी प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं, इसके साथ उसको बोलने और समझनेवालों की संख्या की भी गणना करनी पड़ेगी। हिंदी को जो राजभाषा बनने का सौभाग्य मिला है, यह उसका अपना महत्व है। उन्नीस करोड़* आदमी इसे व्यवहार में लाते हैं। इतने आदमी इसे क्यों बोलते हैं? जिस भाषा को जितने अधिक लोग बोलते हो, उतना ही उसका राष्ट्रीय महत्व मानना होगा। हिंदी का करीब एक हज़ार वर्षों का साहित्य है, जिसमें सूर, तुलसी, मीरा और भारतेंदु से लेकर आधुनिक युग में जयशंकर प्रसाद, पंत, निराला आदि कवियों की बहुमूल्य निधियाँ मौजूद हैं। गद्य-लेखन का कार्य भी काफ़ी हुआ है। इसके अतिरिक्त हिंदी की अपनी परंपरा

---

* *भारतीय संविधान के अनुसार अब मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ हैं।*

* *अब भारत के लगभग 70 करोड़ लोग बोलचाल के रूप में हिंदी की विभिन्न बोलियों का प्रयोग करते हैं।*

है, जो राष्ट्र के जीवन के समस्त संघर्षों से जुड़ी हुई है। वह इतिहास की दृष्टि से भी केंद्र की भाषा है। इसलिए यदि इसको 'राजभाषा' बनाने का प्रस्ताव है, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

राजभाषा के रूप में हिंदी को क्यों चुन लिया गया है?

हमें यहाँ पर राजभाषा और राष्ट्रभाषा के अंतर को समझना आवश्यक है। राजभाषा उसे कहते हैं जो केंद्रीय और प्रादेशिक सरकारों द्‌वारा पत्र-व्यवहार, राज्यकार्य और अन्य सरकारी लिखापढ़ी के काम में लाई जाए। राष्ट्रभाषा की कल्पना इससे भिन्न है। उसका पद और भी बड़ा है। उसी भाषा का गौरव सबसे अधिक हो सकता है, और वही 'राष्ट्रभाषा' कहला सकती है, जिसको सब जनता समझती हो और जिसका अस्तित्व सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो। सरकार की नीति हिंदी को राजभाषा बनाने की है, परंतु सरकारी कार्य सीमित भूमि पर ही होते हैं। भारतीय संविधान में हिंदी को 'आफीशियल लैंग्वेज' बनाने का निर्देश है। इस राजभाषा पर ज़ोर देकर मैं यहाँ कोई सरकारी प्रचार करने नहीं आया हूँ। मैं आपसे राजभाषा नहीं, राष्ट्रभाषा की बात करने आया हूँ। इस संबंध में राज्य-सरकारों

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में क्या अंतर है ?

ने भी नियम नहीं बनाए हैं। पर मित्रो, आज राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की उपयोगिता है साथ ही यह आज की आवश्यकता भी है। आज आप यहीं हैं, पर कल देश के दूसरे भागों में भी आपके जाने की संभावना की जा सकती है। संपूर्ण कार्य आपके यहीं पर, एक ही स्थान पर नहीं हो सकते। आपको नौकरी, व्यापार, तीर्थाटन अथवा अन्यान्य कार्यों के संबंध में देश में भ्रमण करना पड़ता है। कोई भी व्यक्ति सारी ज़िंदगी घर पर नहीं रह सकता। उसे उत्तर या दक्षिण, पूर्व या पश्चिम, कहीं न कहीं जाना ही पड़ेगा। यदि कोई व्यक्ति संपूर्ण जीवन घर पर व्यतीत करे, तो उसे कदाचित् राष्ट्रभाषा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, पर वर्तमान युग ने अपने देश के विभिन्न भागों की दूरी बहुत कम कर दी है। कहीं पर यदि अध्यापन की जगह ख़ाली होती है, तो सारे देश के लोग अपने आवेदन-पत्र भेजते हैं। सारे देश के भागों में से चुनाव होता है। वास्तविक भारतीय प्रजातंत्र की स्थापना तभी हो सकती है जब ऐसा हो। लोग यदि प्रांतीय आचारों पर रहते हैं तो उनकी सार्वत्रिक कमज़ोरियाँ ही बढ़ती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि भाषा पर ध्यान दिया जाए। एक सामान्य भाषा-व्यवस्था होनी ही चाहिए, जिसके द्‌वारा सरकारी नौकरियों में और विभिन्न स्थानों में रहनेवाले व्यक्तियों को सुविधा हो। भारत सरीखे देश में यह आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है कि एक सामान्य भाषा हो। हमारा संविधान भी इस

भारत जैसे देश की एक सामान्य भाषा की ज़रूरत है, क्यों?

बात का पूर्ण रूप से समर्थन करता है। यदि भारतीय संविधान ऐसा होता कि प्रत्येक प्रदेश को अलग-अलग अधिकार दे दिए होते तो कदाचित् आप कह सकते थे कि दिल्लीवाले को पंजाब की भाषा सीखने की आवश्यकता नहीं है। परंतु संविधान में भारत एक इकाई है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक लोगों के समान अधिकार हैं। इस रूप में उन्हें अपने अधिकारों का प्रयोग करना चाहिए।

किसी भाषा को स्वीकार करना या न करना अब व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं की बात है। क्या जबर्दस्ती किसी से कोई भाषा सीखने को कहा जा सकता है? क्या किसी भी दृष्टि में ऐसा उपयुक्त होगा? इसका एकमात्र उत्तर यही है कि हिंदी के किसी भी हिमायती का यह लक्ष्य कदापि नहीं है कि किसी की इच्छा के विरुद्ध वह यह कार्य करे। आज से दो सौ वर्ष पूर्व अंग्रेज़ी जिस प्रकार हमारे गले के नीचे उतारी गई क्या उस रूप में हिंदी भी हमारे ऊपर लादी जाए? मैं इसका विरोध करता हूँ। इस प्रजातंत्र में हिंदी आपकी सेविका है। यह भाषा जनता को बल देनेवाली तो है ही, साथ ही एकता के सूत्र में बाँधनेवाली भी है। आप कह सकते हैं कि अंग्रेज़ी भी तो थी। मेरा निवेदन केवल इतना

लेखक किसका विरोध करता है, क्यों ?

ही है कि डेढ़-दो सौ वर्षों में मुश्किल से एक प्रतिशत से भी कम जनता अंग्रेज़ी जान पाई है। अंग्रेज़ी की उस स्थिति के रहते इसे राष्ट्रीय भाषा नहीं बनाया जा सकता। इस देश की संस्कृति, रीति-नीति, जन-जीवन विभिन्न प्रांतों में सब एक ही प्रकार का है। केरल और अन्य प्रदेशों में कई बातों में समता है। विचारों से लेकर जीवन-चर्या में भी बहुत कुछ साम्य है। परंतु सामान्य भाषा हिंदी भाषा की जानकारी न होने से सर्वत्र विभिन्नता ही दिखती है। इस विभिन्नता को हटाकर यदि हमें पूर्ण एकता को स्थापित करना है, तो यह आवश्यक है कि हमारे देश की एक सामान्य भाषा हो। सच्चे प्रजातंत्र के लिए यह अवश्यक होगा कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का पद दिया जाए। सच्चे अर्थ में हम तभी एक राष्ट्र का स्वरूप ग्रहण कर सकेंगे।

> अंग्रेज़ी को भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बनायी जा सकती, क्यों ?

राष्ट्र को शक्ति देने केलिए हमें आपसी दूरी और विभेद दूर करने होंगे और यह कार्य एक सामान्य भाषा के द्वारा ही संभव है। हिंदी इसके लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। राष्ट्र एक शरीर और एक प्राण के रूप में भली-भाँति तभी कार्य कर सकता है, जब उसमें रहनेवाले निवासियों को यह अनुभव हो कि वे एक राष्ट्र के व्यक्ति हैं। इस दृष्टि से देश में एक भाषा होनी ही चाहिए। ऐसी भाषा

को सीखने के लिए समय का प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता कि इतने समय में यह सबको आ ही जाए। इसमें जनता का मुख्य लक्ष्य राष्ट्रीय होना चाहिए। राष्ट्र की उन्नति और सुविधा केलिए यह आवश्यक है कि हिंदी जैसी भाषा सीखें। हिंदी के प्रसार में जितनी चीज़ें उपस्थित की गई हैं, वे सब वैकल्पिक हैं। उनका किसी पर किसी प्रकार आरोपण नहीं है। जनता में राष्ट्रीय भावना है तो सबकी स्वेच्छा से ही यह सामान्य भाषा की कमी पूर्ण हो सकती है। एक बार हमारा झुकाव इस ओर हो जाए तो राष्ट्रभाषा के बनने में देर न लगे।

सभी भारतीयों को हिंदी सीखनी है, क्यों ?

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी

हिंदी साहित्य के प्रमुख समीक्षक नंददुलारे वाजपेयी जी का जन्म 27 अगस्त 1906 को मगरैर - उन्नाव में हुआ था। उनका निधन 21 अगस्त 1967 ई हुआ था। वर्तमान हिंदी समीक्षा को एक नई दिशा प्रदान करने में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का जबर्दस्त हाथ रहा है। 'राजभाषा और राष्ट्रभाषा' शीर्षक निबंध व्याख्यान के रूप में तैयार किया गया है। इसमें उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। उनकी संयत भाषा और सुलझे हुए मार्मिक तर्कों का पाठकों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

मेरी खोज

- पाठ भाग से तत्सम शब्दों को छाँटकर लिखें।
  जैसे : अभिलाषा, विभिन्न

अनुवर्ती कार्य

- भारत में मान्यता प्राप्त कितनी भाषाएँ हैं? वे कौन-कौन सी हैं?
- 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है'-महात्मा गाँधी।
  राष्ट्रभाषा हिंदी के महत्व को सूचित करनेवाली अन्य उक्तियों का संकलन करें और कक्षा में सूचना पट पर लगाएँ।
- 'हिंदी भारत की आवाज़ है' विषय पर भाषण तैयार करें।

सहायक संकेत :

- ✸ सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का माध्यम है।
- ✸ भारत के लगभग 70 करोड़ लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं।
- ✸ हिंदी भारत की सभी भाषाओं से संबंध रखती है।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
भूमिका है।			
बिंदुओं को विकसित किया है।			
अपना मत है।			
मत का समर्थन किया है।			
उपसंहार है।			
भाषण-शैली है।			

प्रसंगार्थ

राजनीति - politics

बधाई - अभिनंदन

संविधान - constitution

प्रजातंत्र - लोकतंत्र

कदाचित् - शायद

जबर्दस्ती - बलपूर्वक

हिमायती - समर्थक

सरीखे - जैसे

वैकल्पिक - alternative

झुकाव - लगाव

अनुवाद : कला और कौशल

It is a cultural slavery for a independent Nation to have education and official work in some foreign language. - Walter Channing

विदेशी भाषा का किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।
वाल्टर चानिंग

स्रोत भाषा की सामग्री को उसी अर्थ में लक्ष्य भाषा में अनूदित करना ही अनुवाद है।

For the propogation of official language Hindi, the government of India has introduced some schemes. The implementation of these schemes have been very successful in the propogation of the official language. Employees learning Hindi are given incentives. Hindi Exminations are conducted and those who score high marks are given cash awards. A scheme has been introduced in govenment offices to give cash prizes to employees working in Hindi. In central goverment offices Hindi week or Hindi fortnight is celebrated every year.

अनुच्छेद पढ़ें और लिखें।

* राजभाषा हिंदी के प्रचार के लिए भारत सरकार ने क्या-क्या योजनाएँ बनाई हैं?
* सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रोत्साहन के लिए हर साल क्या मनाया जाता है?

- निम्नलिखित प्रक्रियाओं के आधार पर अनुवाद का संशोधन करें।
  - वैयक्तिक संशोधन
  - प्रस्तुति एवं चर्चा
  - परिमार्जन

राजभाषा हिंदी के प्रचार के लिए भारत सरकार ने कुछ योजनाएँ बनाए हैं। इन योजनाओं का कार्यान्वयन राजभाषा के प्रचार में अत्यंत सफल हुआ है। हिंदी पढ़नेवाले कर्मचारियों को प्रोत्साहन दी जाती है। हिंदी परीक्षाएँ चलाया जाता हैं और अधिक अंक पानेवाले कर्मचारियों को नकद पुरस्कार दी जाती हैं। सरकारी कार्यालयों में हिंदी में काम करनेवाले कर्मचारियों को नकद पुरस्कार देने केलिए एक योजना लागू किया गया है। भारत सरकार के कार्यालयों में हर साल हिंदी सप्ताह या हिंदी पखवाड़ा मनाई जाती है।

अनुवर्ती कार्य

हिंदी में अनुवाद करें

All people especially students who are engaged in hard mental work require some recreation that is why our schools and other educational institutions provide facilities for sports. Sports develop the muscles of body and make people healthy. There can be a sound mind only in a sound body. By making our body sound we can make our mind clear and active. Sports do much to the development of character as well. We learn to appreciate the good in others.

प्रसंगार्थ

Propogation	-	प्रचार
Scheme/Plan	-	योजना
Incentives	-	प्रोत्साहन
Cash award	-	नकद पुरस्कार
Fortnight	-	पखवाड़ा
Hard mental work	-	कठोर मानसिक प्रयत्न
Recreation	-	मन-बहलाव
Muscles	-	मांसपेशियाँ
Active	-	सक्रिय

साँप

साँप!
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना
भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ- (उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखा डँसना
विष कहाँ पाया?

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन

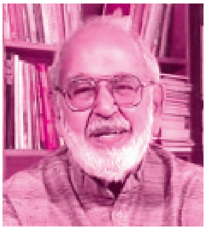

अज्ञेय का जन्म 1911 में हुआ। कविता में नए स्वरुप, नए प्रतिमान और नए-नए वैचारिक दार्शनिक धरातलों की स्थापना में अज्ञेय ने योग दिया है। 'नई कविता' के अपनी रुचि के कवियों की कविताएँ आपने तार-सप्तक के नाम से संकलित किया। भग्नदूत, चिंता, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी आदि इनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हैं।

मेरी खोज

- कवि क्यों आशंकित हैं?

अनुवर्ती कार्य

- कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।
- नगरी सभ्यता और ग्रामीण सभ्यता में क्या-क्या भिन्नताएँ हैं? एक भाषण तैयार करें।

सहायक संकेत :

नगरी सभ्यता	ग्रामीण सभ्यता
बाहरी आडंबर	सादगी
कृत्रिमता	अकृत्रिमता

एक नज़र

साँप नामक कविता के माध्यम से अज्ञेय शहर में रहनेवाले, अपने को सभ्य माननेवाले मानव पर व्यंग्य करते हैं। हमारा देश पहले गाँवों का भोलापन और वहाँ की अकृत्रिमता से भरा था। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के आगमन से हमारे गाँव धीरे-धीरे आँखों से ओझल होने लगे और शहर उभरकर आने लगे। तब से मानव में स्वार्थता, धोखा आदि बढ़ते गए। भाई अकारण भाई पर आक्रमण करने लगा। सब अपने-अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्रतियोगिता में भाग लेने लगे।

प्रसंगार्थ

सभ्य - भलों का-सा व्यवहार करना
डँसना - विषैले जंतुओं का काटना

संबंध बोधक

जिन अव्यय शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है वे संबंध बोधक कहलाते हैं। इसके भेद हैं–

✸	कालवाचक/ स्थान वाचक	- के आगे, के पीछे, के बाद, से पूर्व
✸	दिशावाचक	- की ओर/तरफ़
✸	साधनवाचक	- के द्‌वारा, के सहारे
✸	कारणवाचक	- के कारण, के मारे
✸	उद्‌देश्य वाचक	- के हेतु
✸	अपादानवाचक	- से दूर, से परे
✸	सादृश्य वाचक	- के समान, के तुल्य, की तुलना
✸	विरोधवाचक	- के विरुद्‌ध
✸	साहचर्यवाचक	- के साथ
✸	व्यतिरेकवाचक	- के अलावा

अनुवर्ती कार्य

- 'राजभाषा और राष्ट्रभाषा' निबंध से संबंध बोधकों को सूचित करनेवाले शब्द ढूँढ़कर लिखें।

जैसे - के नीचे

के द्‌वारा

के साथ

- ढूँढ़े हुए शब्दों को सही खंभे में भरें।

काल/स्थान और दिशा को सूचित करनेवाले	साधन, कारण और उद्‌देश्य को सूचित करनेवाले	आपादान, सादृश्य और विरोध को सूचित करनेवाले	साहचर्य और व्यतिरेक को सूचित करनेवाले

साहित्य का इतिहास

उपन्यास साहित्य

आज जिस अर्थ में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग किया जाता है वह अंग्रेज़ी के 'नॉवल' शब्द का पर्याय है।

डॉ श्यामसुंदर दास के अनुसार 'उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है। प्रेमचंद उपन्यास को 'मानव जीवन का चित्र समझते हैं। उनकी मान्यता है कि 'मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।'

उपन्यास विधा का वर्गीकरण विभिन्न आधारों पर किया जा सकता है। तत्वों के आधार पर घटना प्रधान, चरित्र प्रधान और नाटकीय उपन्यास।

हिंदी उपन्यास का इतिहास जानने के लिए और विवेचन की सुविधा के लिए प्रेमचंद को केंद्र में रखकर हिंदी उपन्यास को तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है।

प्रेमचंदपूर्व युग
1882 से 1918 तक
प्रेमचंद युग
1919 से 1936 तक
प्रेमचंदोत्तर युग
1936 से आज तक

प्रेमचंदपूर्व युग

इस विधा का आरंभ भारतेंदु युग से माना जा सकता है। लाला श्रीनिवास का 'परीक्षा गुरु' हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है। जासूसी, तिलस्मी और ऐय्यारी उपन्यासों में देवकीनंदन खत्री, किशोरीलाल गोस्वामी, गोपालराम गहमरी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' प्रारंभकालीन उपन्यासों में मुख्य था।

प्रेमचंद युग

उपन्यास को मानव-जीवन के अधिक निकट लाने का श्रेय प्रेमचंद को ही है। उनके उपन्यासों में किसानों की आर्थिक अवस्था, सामाजिक कुरीतियाँ, हिंदु-मुस्लिम एकता, ज़मींदारों और पुलीस के अत्याचार, मध्यवर्गीय जीवन की अनेकमुखी समस्याएँ कलात्मक रूप से चित्रित हुई हैं।

इस युग में अन्य अनेक प्रतिभाओं का उदय हुआ। जयशंकर प्रसाद, शिवपूजन सहाय, चतुरसेन शास्त्री, विश्वंभरनाथ कौशिक, बेचन शर्मा 'उग्र' आदि लेखकों का महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रेमचंदोत्तर युग

इस युग में कथा-साहित्य में कई नवीन प्रवृत्तियों का समावेश हुआ। मनोवैज्ञानिक, यथातथ्यवाद, प्रतीकवाद, अवचेतनावाद आदि से इस युग का उपन्यास साहित्य प्रभावित रहा। सामाजिक युग के बदलते हुए मूल्यों को रेखांकित करते हैं इस युग के उपन्यास।

भगवती चरण वर्मा, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, यशपाल, जैनेंद्र, अज्ञेय, धर्मवीर भारती आदि का विशिष्ट योगदान रहा।

कहानी साहित्य

कहानी आकर्षक, रमणीय, सारगर्भित, प्राचीन साहित्यिक विधा है। कहानी अनादिकाल से मौखिक रूप में थी। अपने शैशव में वह मनोरंजन का साधन थी। गिरिराज किशोर कहानी को साहित्य-जननी मानते हैं।

कथा सम्राट प्रेमचंद कहानी की विवेचना इस तरह करते हैं- 'कहानी ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सभी उसी एक भाव को स्पष्ट करते हैं। वह एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।'

कहानी के विकास के विभिन्न युग

हिंदी कहानी में मुंशी प्रेमचंद की प्रतिभा का कहानीकार दूसरा नहीं हुआ, वे हिंदी कहानी के शालाका पुरुष हैं। अतः उन्हीं को केंद्र में रखकर समस्त हिंदी कहानी के इतिहास को निम्नस्थ रूप में विवेचित किया जा सकता है।

प्रेमचंद पूर्व युग या प्रारंभिक युग
(1900-1915)
प्रेमचंद युग या विकास युग
(1915-1936)
प्रेमचंदोत्तर युग या समृद्धि युग
(1936-1950)
नई कहानी
(1950-1965)
समकालीन कहानी
(1965-2014)

श्रेष्ठ कहानियाँ कालजयी रहती हैं। हिंदी कहानी का भंडार ऐसे अनमोल कहानी रत्नों से भरा हुआ है।

मेरी खोज

- उपन्यास की परिभाषाएँ पाठ भाग से छाँटकर लिखें।
- कहानी की परिभाषाएँ पाठ भाग से छाँटकर लिखें।

अनुवर्ती कार्य

- प्रेमचंद के कुछ उपन्यासों और कहानियों के नाम यहाँ दिए गए हैं। उनका वर्गीकरण करें।

निर्मला, कफ़न, गोदान, पंचपरमेश्वर, सेवासदन, कायाकल्प, पूस की रात, पंचलैट, नमक का दारोगा, परीक्षा, गबन, रंगभूमि

उपन्यास	**कहानी**
निर्मला	कफ़न
....	....
....	....

- उपन्यास-साहित्य पर टिप्पणी लिखें।
- कहानी-साहित्य पर टिप्पणी लिखें।

इकाई-तीन

अतीत के सपनों में

तीसरी इकाई है अतीत के सपनों में। पहला पाठ जीवनी है – एक अंतरंग परिचय। सुलोचना रांगेय राघव अपने पति तथा प्रसिद्ध साहित्यकार रांगेय राघव के साथ की अपनी ज़िंदगी के छह-सात वर्ष के कुछ मार्मिक प्रसंगों का स्मरण करती है। इकाई का दूसरा पाठ हिंदी के प्रसिद्ध समकालीन कवि उदय प्रकाश की कविता 'दो हाथियों की लड़ाई' है। उन्होंने हाथियों के माध्यम से अपने समय की विद्रूपता का चित्रण किया है। दो समान शक्तिवाले जब भिड़ते हैं तब उसका असर उनसे ज़्यादा उनके इर्द-गिर्द रहनेवालों और परिवेश पर पड़ता है। इसलिए उनकी लड़ाई को रोकना चाहिए। तीसरा पाठ रामदरश मिश्र की डायरी का अंश है। इसमें परिवार से जुड़े प्रसंग को उन्होंने वाणी दी है। इकाई का अगला पाठ समुच्चय बोधक अव्यय से छात्रों को परिचित कराता है। इस इकाई का अंतिम पाठ हिंदी के नाटक साहित्य के साथ एकांकी, जीवनी और आत्मकथा का संक्षिप्त परिचय देता है।

अधिगम उपलब्धियाँ

- जीवनी की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है।
- जीवनी के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- समकालीन कविता की प्रवृत्तियों की अवधारणा पाकर टिप्पणी लिखता है।
- कविता का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।
- डायरी की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है।
- डायरी के आशय का विश्लेषण करके टिप्पणी लिखता है।
- समुच्चय बोधक की अवधारणा पाकर प्रयोग करता है।
- नाटक-साहित्य और एकांकी-साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ पहचानकर व्याख्या देता है।
- जीवनी-साहित्य और आत्मकथा-साहित्य की शैलीगत एवं भाषागत अंतर पहचानकर व्याख्या देता है।

एक अंतरंग परिचय

बेटे,

कितने समय से इस दिन की प्रतीक्षा कर रही थी, तुम कदाचित् नहीं जान पाओगी। जिस प्रकार घड़े में पानी भरता रहता है और अचानक छलकने लगता है, वैसे ही मेरी स्थिति हो रही है। तुमने बेटे, मुझसे भिन्न-भिन्न प्रश्न किए हैं और मैं अकसर निरुत्तर होती रही हूँ, यही सोचकर कि तुम उन सब बातों को समझ भी पाओगी, जो मैं इतने वर्षों से संजोये बैठी हूँ ! और, इसी समय की प्रतीक्षा में रही हूँ कि कब तुमसे ढेर सारी बातें करूँ, जिन्हें तुम समझ सको, तुम्हारी रग-रग में तुम्हारे पिता का एहसास भर दूँ और इसी प्रकार पुनः मुझे उनके साथ जीने का अवसर प्राप्त हो जाए। एक चित्रपट की भाँति मेरे मानस पर तुम्हारे पिता के साथ बिताए हर क्षण की प्रतिच्छाया बनी हुई है, और मैं चाहती हूँ, कि एक-एक कर इन छायाओं के आवरणों को खोलकर तुम्हारे सामने रख दूँ।

सन् 1953 की वह संध्या मुझे आज भी याद आ रही है, जब पहली बार डॉ.रांगेय राघव हमारे घर आए थे। हम छोटे भाई-बहनों को उस कमरे में जाना मना था, जहाँ पर वे बैठे

थे। उस समय वे हमारी बड़ी बहिन को देखने आए थे जो बाद में उनकी भाभी बनीं। उन्हें देखने की उत्सुकता मुझमें बढ़ती जा रही थी और मैंने संकल्प कर लिया था कि उस व्यक्ति को मैं अवश्य ही देखकर रहूँगी, जिसकी रचनाओं ने मुझे प्रभावित किया था। मैंने उन्हें पर्दे की ओट से आखिर देख ही लिया और देखती ही रह गयी!!! कितना भव्य व्यक्तित्व... कितना असाधारण!!! उनकी आँखों की चमक ही मुझे निराली लगी थी। उच्च ललाट, गौर वर्ण और लंबा क़द - कहीं राम की प्रतिमूर्ति तो नहीं खड़ी कर दी?

उन दिनों जब वे हमारे घर आए थे, तब चाय नहीं पिया करते थे। हमारे भाई ने जब दूध के लिए आग्रह किया, तब बोले, "बच्चा थोड़े ही हूँ", और बहुत खुलकर हँसे थे। वह हँसी कितनी निश्छल थी,मुझे आज भी याद है। चलते समय मेरा परिचय उनसे करवाया गया और उन विशाल आँखों ने मुझे ऐसे देखा, कि क्षण-भर के लिए, मैं स्तब्ध रह गयी।

लगभग दो वर्ष पश्चात्, 1955 में, मैं अपनी बड़ी बहिन (उनकी भाभी) की ससुराल में ग्रीष्मावकाश व्यतीत करने गई थी - उसी रमणीय स्थान पर, जो मुझे आज भी, तुम्हारे अप्पा (पिता) का एहसास दिलाता है। जिस दिन

हम वहाँ पहुँचे मेरी आँखें उन्हें ही खोजती रहीं, किंतु वे कहीं नहीं दिखाई दिए। मैं कुछ निराश हो गई थी। संध्या भी धीरे-धीरे रात्रि में ढलने लगी थी, तब उसी विशाल प्रकोष्ठ (कचहरी) के अंधेरे कोने में किसीने दीप जलाया और साथ ही मेरे मन का अंधकार भी दूर हो गया। लैंप हाथ में लिए वे अपने कमरे में चले गए और मैं उस आकृति को देखती रही, उस पूरे वातवरण को निहारती ही रह गयी... कितना रहस्यमय था सब कुछ! कितना तो बड़ा घर और कितना प्राचीन!! उन्हें जाते देखकर लगा, कालिदास जा रहे हैं!!!

दूसरे ही दिन मैं उनके पुस्तकालय में पहुँच गई। इधर-उधर कुछ पुस्तकों को उलट ही रही थी, कि उनका वहाँ आना और अचानक पूछ बैठना - "आप क्या कर रही हैं?" ने मुझे लगभग चौंका ही दिया था। घबराहट की अवस्था में, एक स्कूल-छात्रा की भाँति खड़े होकर मैंने उत्तर दिया था, "आप ही की किताबें देख रही हूँ।" इस बात पर मुस्कुराए और कहने लगे, "मैं पूछ रहा हूँ कि आपने क्या पास कर लिया है?" और हिचकिचाते हुए मैंने उत्तर दिया था, "एस.एस.सी (अर्थात् हाईस्कूल पास कर लिया है)," और मन-ही-मन उनके अन्य प्रश्नों के लिए तैयार हो गई थी।

जिस व्यक्ति को देखने के लिए मुझे इतना परिश्रम करना पड़ा था, आज वही मेरे समक्ष है, यह महसूस कर

मैं स्तंभित रह गई बातों-ही-बातों में उन्होंने जानना चाहा था कि मेरी आगे अध्ययन में रुचि है या नहीं, साहित्य के प्रति कितना रुझान है, कौन-कौन उपन्यास पढ़ डाले, इत्यादि। इतना बड़ा साहित्यकार और इतनी सरल बातें, यह मैं सोच भी नहीं सकती थी। हाँ बेटे, इधर-उधर की कई तरह की बातें होती रहीं। मुझे कुछ समय तक विश्वास ही नहीं हुआ कि मैं एक बड़े साहित्यकार के साथ बात कर रही हूँ। इन्हीं बातों में उन्होंने यह भी बताया था कि वे लेखन-कार्य से ऊब गए थे और कुछ परिवर्तन चाहते थे। उनकी यह बात सुन मुझे न केवल आश्चर्य वरन दुःख भी हुआ और अपनी ओर से बराबर यही कहती रही कि वे ऐसा न करें। उस समय मैं एकाएक बुजुर्ग बनकर उन्हें जैसे सलाह देने लग गई थी कि वे इस ऊब को समाप्त करने के लिए कुछ अवकाश अवश्य लें, पर लेखन-कार्य कदापि न छोड़ें।

लेखक के जीवन की आलोचना करते हुए वे बार-बार यही कहते रहे कि यदि किसी व्यक्ति को अपना जीवन ढंग से व्यतीत करना हो, तो उसे लेखक के अतिरिक्त सब-कुछ बनना चाहिए। लेखक के जीवन के प्रति उनकी उदासीनता देख, उस समय तो मेरी समझ में कुछ नहीं आया था, परन्तु बाद में पता चला कि वे मेरी परीक्षा ही ले रहे थे, और यह जानना चाह रहे थे कि मेरी साहित्य के प्रति रुचि किस हद तक है।

- डॉ सुलोचना रांगेय राघव

हिंदी के प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं डॉ सुलोचना रांगेय राघव। उनका जन्म 31 जुलाई 1936 को जूनागढ़ (गुजरात) में हुआ था। वे राजस्थान विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफ़ेसर थीं। हिंदी, अंग्रेज़ी के अतिरिक्त गुजराती, मराठी तथा तमिल भाषाओं पर उनका अधिकार है। वे हिंदी के विख्यात साहित्यकार डॉ रांगेय राघव की पत्नी है।

प्रकाशित पुस्तकें : पुनः (रांगेय राघव के अंतरंग जीवन पर बहुचर्चित संस्मरणात्मक पुस्तक), दि सोश्योलॉजी ऑव इंडियन लिटरेचर (ए सोश्योलॉॉजिकल स्टडी आफ़ हिंदी नॉवल्स), रांगेय राघव ग्रंथावली।

मेरी खोज

- रांगेय राघव के प्रति लेखिका के प्रेम और आदर को सूचित करनेवाले प्रयोग पाठ भाग से छाँटकर लिखें।

  जैसे - कितना भव्य व्यक्तित्व

  ....

  ....

  ....

अनुवर्ती कार्य

- “मैंने उन्हें पर्दे की ओट से आख़िर देख ही लिया और देखती ही रह गयी...”

  रांगेय राघव से अपने मिलन का यह अनुभव लेखिका ने डायरी में कैसे लिखा होगा। कल्पना करके लिखें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
घटना की सूचना है।			
संवेदना की अनुभूति है।			
आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति है।			
आत्मपरक शैली है।			

- रांगेय राघव के पुस्तकालय में लेखिका का मिलन अचानक उनसे हो जाता है। इस प्रसंग पर दोनों के बीच का वार्तालाप तैयार करें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
प्रसंगानुसार अभिव्यक्ति है।			
स्वाभाविक शुरुआत है।			
प्रश्नोत्तर शैली है।			
स्वाभाविक अंत है।			

प्रसंगार्थ

कदाचित्	-	शायद
छलकना	-	to spill
संजोना	-	बटोरकर रखना
रग	-	नस, नाड़ी
रग रग में	-	पूरे शरीर में
एहसास	-	अनुभूति
ललाट	-	मस्तक
ढलना	-	बीत जाना
निहारना	-	ध्यानपूर्वक देखना
घबाराहट	-	संकोच
हिचकिचाना	-	सकपकाना
रुझान	-	रुचि
ऊबना	-	to be bored
बुजुर्ग	-	वृद्ध
अवकाश	-	विश्राम
कदापि	-	कभी भी

दो हाथियों की लड़ाई

दो हाथियों का
लड़ना
सिर्फ़ दो हाथियों के समुदाय से
संबंध नहीं रखता।

दो हाथियों की लड़ाई में
सबसे ज़्यादा कुचली जाती है
घास, जिसका
हाथियों के समूचे कुनबे से
कुछ भी लेना-देना नहीं।

जंगल से भूखी लौट जाती है
गाय
और भूखा सो जाता है
घर में बच्चा

दो हाथियों के
चार दाँतों और आठ पैरों द्वारा
सबसे ज़्यादा घायल होती है
बच्चे की नींद,
सबसे अधिक असुरक्षित होता है
हमारा भविष्य।
दो हाथियों की लड़ाई में
सबसे ज़्यादा
टूटते हैं पेड़

सबसे ज़्यादा मरती हैं
चिड़ियाँ,
जिनका हाथियों के पूरे कबीले से कुछ भी
लेना-देना नहीं

दो हाथियों की
लड़ाई को
हाथियों से ज़्यादा
सहता है जंगल।

और इस लड़ाई में
जितने घाव बनते हैं
हाथियों के उन्मत्त शरीरों पर
उससे कहीं ज़्यादा
गहरे घाव
बनते हैं जंगल और समय
की छाती पर।

जैसे भी हो
दो हाथियों को
लड़ने से रोकना चाहिए।

उदय प्रकाश

श्री. उदयप्रकाश समकालीन हिंदी कवियों में श्रेष्ठ हैं। उनका जन्म 1 जनवरी 1952 में मध्यप्रदेश के शहरूर जिले में हुआ। उनके प्रमुख कविता संग्रह हैं - सुनो कारीगर, अबूतर-कबूतर, रात में हारमोनियम, कवि ने कहा आदि। उनकी कहानियों के कई संकलन प्रकाशित हुए हैं। जैसे - दरियाई घोड़ा, तिरिछ, मोहनदास। केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार आदि से वे सम्मानित हुए। उनकी रचनाओं में मनुष्य की कोमल संवेदनशीलता को बचाए रखने की कोशिश है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पहचान रखनेवाली उनकी रचनाओं ने उत्तराधुनिक समय को संप्रेषित किया है।

मेरी खोज

- सही मिलान करें।

क	ख
घास	भूखी लौट जाती है।
गाय	कुचली जाती है।
भूखा बच्चा	टूटते हैं।
पेड़	ज़्यादा मरती है।
चिड़िया	सो जाता है।

अनुवर्ती कार्य

- कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
कवि का परिचय है।			
काव्यधारा और रचनाकाल की सूचना है।			
कविता का सार है।			
अपने दृष्टिकोण से कविता का विश्लेषण किया है।			

एक नज़र

कोई भी समुदाय कभी भी युद्ध नहीं चाहते। परंतु परिस्थितियों की विवशता के कारण उन्हें युद्ध सहना पड़ता है। युद्ध दो जनपदों या समुदाय के बीच होनेवाला नहीं, बल्कि दो व्यक्तियों के बीच होनेवाला है। परंतु अंततः इसका फल सारी जनजातियों को भोगना पड़ता है। युद्ध के सबसे भीषण आघात स्त्रियों और बच्चों पर होता है जो जंगल के हाथियों की लड़ाई की तुलना में या तो घास जैसे होता है या गाय जैसा। युद्ध दो व्यक्तियों के भीतर उत्पन्न होनेवाला सच है जिसे कालांतर में इतिहास का सच बनाया जाता है। इसलिए दो व्यक्तियों के मन में शुरू होनेवाला युद्ध वहीं पर रोक देना ही सही है। नहीं तो वह समाज का सत्यनाश करेगा।

प्रसंगार्थ

कुचलना - पैरों से दबाना
कुनबे - परिवार
कबीले - समूह, दल
घाव - चोट
उन्मत्त - मतवाला

वास्तव में घर एक पाठशाला है...

आकाशवाणी में 18.09.2014

कुछ दिन पहले श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी का फोन आया था, "मिश्रजी, बहुत दिन हो गए आपको आकाशवाणी में आए हुए। कहिए, किस दिन गाड़ी भेज दूँ?"

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा, "मैं तो अब प्रायः घर ही रहता हूँ। आप लोगों को जब कभी सुविधा हो, सूचित कर दें। मैं आ जाऊँगा। हाँ, लेकिन अभी बहुत ठंड है। मौसम अच्छा हो जाए तब बुलाइएगा"

"जी हाँ, तभी बुलाऊँगा।"

और कल का दिन निश्चित किया गया था। यद्यपि मौसम में अभी भी शीत और ऊष्मा का ऊहापोह मचा हुआ था। कभी लगता है कि दिन कुछ प्रसन्न हो रहे हैं, लेकिन फिर ठंडक उन्हें उदासी से नहला देती है। संयोग से कल का दिन बहुत प्रीतिकर रहा। धूप खिलखिला रही थी। दिन के साथ मन में भी ऊष्मा की हँसी छाई हुई थी। पौने बारह बजे से आकाशवाणी से गाड़ी आई। मेरे साथ बेटी स्मिता भी हो ली। दरअसल, आजकल मैं अकेले निकलता नहीं हूँ। निकलना चाहूँ भी तो सरस्वतीजी निकलने

नहीं देतीं। या तो स्वयं साथ हो लेती हैं या किसीको साथ लगा देती हैं। मुझे कभी-कभी डगमगाहट होती है। उन्हें डर लगा होता है कि राह में मैं कहीं गिर न पड़ूँ।

काफी दिनों बाद घर से निकला था। बहुत अच्छा लग रहा था। रास्ते में कई स्थानों पर फूलों की पंक्तियाँ खिलखिला रही थीं। उनसे वसंतागम की हल्की-हल्की आहट प्रतीत हो रही थी। राष्ट्रपति भवन के पास से गुज़रा तो लगा कि मुगलगार्डन में फूलों की बहार आई होगी। वे अदृश्य भाव से मेरे साथ हो लिए। उनकी प्रतीति से मन पुलकित हो रहा था।

आकाशवाणी पहुँचा तो अरुण कुमार पासवानजी ने स्वागत किया। उन्हें पहली बार देख रहा था। वे बहुत ही सौम्य और प्रीतिकर व्यक्ति लगे। उनसे ज्यों-ज्यों बात होती गई, उनकी प्रीतिकर्ता हम दोनों पर छाती गई। देखा, उनकी मेज़ पर मेरी आत्मकथा(सहचर है समय) रखी हुई है। मैंने पूछा,"आज का कार्यक्रम क्या है?" उन्होंने कहा, "आपसे थोड़ी बातचीत करनी है।" मैंने अपना कविता-संग्रह (पचास कविताएँ) साथ रख लिया था, यह सोचकर कि शायद कविता-पाठ करना पड़े।

पासवानजी ने मेरे हाथ में कविता-संग्रह देखा तो कहा, "अच्छा हुआ, जो आपने कविता-संग्रह

साथ रख लिया है। बातचीत के बीच कविता-पाठ का भी क्रम चलता रहेगा।'

बत्तीस मिनट की बातचीत हुई। पासवानजी ने बहुत श्रम और विवेकपूर्ण

ढंग से प्रश्न तैयार किए थे। सच बात तो यह है कि वे बने-बनाए प्रश्न थे ही नहीं। पासवानजी मेरी रचनाओं से गुज़रते हुए रचनाओं के माध्यम से ही बात उठाते रहे।

कभी आत्मकथा से गुज़रे कभी कविताओं से, कभी कथा-साहित्य से। प्रश्नों में बहुत रचनात्मक ढंग से साहित्य और जीवन की जुगलबंदी होती रही। जाहिर है, ऐसे प्रश्नों के सामने जो उत्तर होंगे, वे भी रचनात्मक ही होंगे। बड़ी कोफ्त होती है, जब कोई साक्षात्कारकर्ता कुछ बने-बनाए हुए प्रश्नों को पेश कर देता है। तब उत्तर भी बने-बनाए और नीरस होते हैं और लगता है कि ये उत्तर तो कई बार दिए जा चुके हैं। लेकिन यहाँ रचनात्मक ढंग के प्रश्नों के सामने होने में बहुत नवता और ताज़गी महसूस हो रही थी। बीच-बीच में कविता की उपस्थिति बातचीत को और भी सर्जनात्मक रूप दे रही थी। जब बातचीत संपन्न हुई तो लगा, जैसे मैंने एक लंबी कविता पढ़ी है। मैंने और स्मिता ने पासवानजी को ऐसे रचनात्मक संवाद के लिए धन्यवाद दिया और बधाई भी!

- रामदरश मिश्र

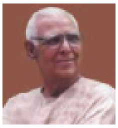

हिंदी के मूर्धन्य कवि-साहित्यकार, रामदरश मिश्र ने साहित्य की अनेक विधाओं को अपने रचनात्मक अवदान से समृद्ध किया। उनका जन्म 15 अगस्त 1924 को गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। 'जन टूटता हुआ'और 'पानी के प्राचीर' उपन्यासों की धूम रही। अभी हाल में कविता-संग्रह 'आम के पत्ते' व्यास सम्मान से अलंकृत। इसके अतिरिक्त भी अनेक विशिष्ट सम्मानों से सम्मानित।

मेरी खोज

- रामदरश मिश्र की आत्मकथा और कविता संग्रह का नाम पाठभाग से ढूँढ़कर लिखें।
- 'रचनात्मक संवाद' से क्या तात्पर्य है?

अनुवर्ती कार्य

- रामदरश मिश्र के साथ आकाशवाणी में अरुणकुमार पासवानजी की बातचीत तैयार करें।
- पिता के साथ आकाशवाणी जानेवाली स्मिता उस दिन के अपने अनुभवों को आत्मकथा में लिखती है। वह आत्मकथांश कल्पना करके लिखें।

सहायक संकेत :

- पिता के साथ आकाशवाणी जाना
- पासवानजी और पिताजी की बातचीत सुनना
- पिताजी की ख़ुशी को पहचानना

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
अनुभवों का वर्णन है			
आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति है			
संवेदना की अनुभूति है			
आत्मकथात्मक शैली है			

प्रसंगार्थ

प्रीतिकर - संतोषप्रद
डगमगाहट - विचलन
बहार - वसंत
जुगलबंदी - युग्मगान
जाहिर - प्रकट
कोफ्त - दुख
नवता - नवीनता
ताज़गी - ताज़ापन

समुच्चय बोधक

दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को मिलानेवाले अव्यय समुच्चय बोधक कहलाते हैं। इन्हें योजक भी कहते हैं।

इसके भेद हैं :

संयोजक	-	और, एवं, तथा
वियोजक	-	अथवा, या, व, कि
विरोध	-	परंतु, किंतु, लेकिन
परिणाम	-	इसलिए, अतः
कारण	-	क्योंकि, इसलिए
उद्देश्य	-	ताकि, जिससे
संकेत	-	यदि-तो, अगर-तो
स्वरूप वाचक	-	कि, अर्थात्

अनुवर्ती कार्य

- ‘अंतरंग पहचान’ जीवनी से समुच्चय बोधक शब्दों को ढूँढ़कर लिखें।

  जैसे : और, किंतु, कि,...

➤ ढूँढ़े हुए शब्दों को सही खंभे में भरें।

संयोजक और वियोजक को सूचित करनेवाले	विरोध और परिणाम को सूचित करनेवाले	कारण और उद्देश्य को सूचित करनेवाले	संकेत और स्वरूपवाचक को सूचित करनेवाले

साहित्य का इतिहास

नाटक साहित्य

'नाटक' शब्द का अर्थ है 'नट् लोगों की क्रिया।' काव्य के सर्वगुण संयुक्त खेल को नाटक कहते हैं। उक्त परिभाषा हिंदी नाटकों के वास्तविक जन्मदाता भारतेंदु हरिश्चंद्र की है। डॉ. गुलाबराय कहते हैं - 'नाटक में जीवन की अनुकृति को शब्दगत संकेतों में संकुचित करके उसको सजीव पात्रों द्वारा एक चलते -फिरते सप्राणरूप में अंकित किया जाता है। नाटक जीवन की संकेतिक अनुकृति नहीं है, वरन् एक सजीव प्रतिलिपि है।

हिंदी में नाटक साहित्य

भारतेंदुपूर्व युग

हिंदी में नाटकों का आरंभ भारतेंदु काल से हुआ। इसके पूर्व जो नाटक लिखे गए उनमें नाटकीय शैली क्रियाशीलता और रंगमंचीयता का अभाव है।

भारतेंदु युग

भारतेंदु युग राष्ट्रीय जागरण और नवजागरण एवं नव सांस्कृतिक चेतना के उन्मेष का युग है। भारतेंदु ने संस्कृत, प्राकृत, बंगला और अंग्रेज़ी के अनेक नाटकों का अनुवाद किया तथा साथ ही अनेक हिंदी नाटकों के अभिनय की

व्यवस्था कर उसमें भाग भी लिया।इसी कारण नाटक की रंगमंचीयता का उन्होंने विशेष ध्यान दिया।

द्विवेदी युग

द्विवेदी युग का दृष्टिकोण सुधारवादी था। इसलिए मनोरंजन को प्रश्रय देनेवाले नाटकों की रचना इस युग में बहुत कम हुई। जिन नाटकों की रचना हुई, उनके पात्र सात्विक प्रवृत्ति के महापुरुष थे। इस युग के लेखक आर्य समाज की नैतिकता तथा गँधीजी की आदर्शवादिता से बहुत प्रभावित थे।

प्रसाद युग

नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद के आगमन से एक नए युग की शुरूआत होती है। भारतेंदु के नाटकों में राष्ट्रीय, संस्कृतिक और सामाजिक नवजागरण की चेतना का संपूर्ण विकास और उत्कृष्ट रूप प्रसाद के नाटकों में मिलता है। प्रसाद ने अपने नाटकों के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को चुना और भारत के गौरवपूर्ण अतीत से कथानक ग्रहण किया। इतिहास, संस्कृति और दर्शन का गहन अध्ययन करके अपने नाटकों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समृद्ध किया।

प्रसादोत्तर नाटक

प्रसाद के बाद हिंदी नाटकों ने बहुमुखी प्रगति की। हिंदी नाटकों का अपेक्षाकृत अधिक सार्थक दौर पाँचवें दशक के अंतिम चरण में शुरू हुआ। जीवन और

साहित्य को परंपरागत दृष्टिकोण से हटकर नए ढंग से देखा - परखा गया। नाटक को आधुनिक भावबोध के साथ संबद्ध करनेवाले प्रथम नाटककार उपेंद्रनाथ अश्क थे।

नुक्कड़ नाटक इसी युग में सामने आए। राजनीतिक विचारधारा से प्रेरित प्रचार या सुधारवादी दृष्टि से ये नाटक लिखे जाते हैं। नुक्कड़ नाटक पाँच मिनट से लेकर तीस-पैंतीस मिनट तक चलता है और किसी भी उद्देश्य को साफ़-साफ़ सामने लाता है। सफ़दर हाशमी, रमेश उपाध्याय आदि इस विधा के प्रवर्तक रहे।

एकांकी साहित्य

आधुनिक हिंदी एकांकी पाश्चात्य साहित्य की देन है। प्रसिद्ध एकांकीकार डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार-‘एकांकी में एक घटना होती है और वह नाटकीय कौशल से चरम सीमा तक पहुँचती है।’ एकांकी अधिकांश एक ही अंक का कार्य-कलाप है। अतः संपूर्ण कार्य एक ही समय और स्थान में होना चाहिए। नाटक के समान एकांकी में भी सात तत्व होते हैं- कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, अभिनेयता, देशकाल, वातावरण, संवाद, भाषा-शैली, उद्देश्य।

जीवनी साहित्य

जीवनी अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का कालक्रमानुसार वर्णन होती है।

जीवनी में प्रसंग के अनुसार देश-काल व तत्कालीन स्थितियों का वर्णन किया जाता है।

जीवनी के अंतर्गत चरित नायक की विशेषताओं, उसके महनीय कृत्यों, बौद्धिक गुणों तथा उसकी सफलताओं असफलताओं का वर्णन किया जाता है।

लेखक को तटस्थ भाव से जीवनी लेखन का कार्य करना चाहिए।

आत्मकथा साहित्य

आत्मकथा का चरितनायक स्वयं लेखक होता है जो अपने विषय में सच्चाई और ईमानदारी से वर्णन करता है।

आत्मकथा में लेखक अपने मुक्त यथार्थ की अभिव्यंजना करता है क्योंकि मुक्त यथार्थ का भोक्ता ही यहाँ स्वयं प्रवक्ता होता है।

लेखक आत्मकथा लिखते समय समकालीन इतिहास का विवेचन भी करता है।

आत्मकथा में लेखक सामाजिक परिस्थिति में और देशकाल का प्रसंगानुसार वर्णन करता हैं, किंतु निजी रागद्वेष का वर्णन करना आत्मकथा के लिए अशोभनीय माना गया है।

आत्मकथा साहित्यिक कोटि में तभी परिगणित हो सकती है जब कि उसमें भाषा और शिल्प का लालित्य हो तथा अनावश्यक विवरणों का विस्तार न हो।

मेरी खोज

- पाठभाग से नाटक साहित्य का काल-विभाजन छाँटकर लिखें।

अनुवर्ती कार्य

- 'नुक्कड़ नाटक' से क्या तात्पर्य है?
- एकांकी की विशेषताएँ क्या-क्या हैं?
- जीवनी में चरितनायकों के कौन-कौन से स्तरों का वर्णन होता है?
- आत्मकथा की कौन-कौन सी विशेषताएँ हैं?

इकाई चार

आस की चुप्पी में

चौथी इकाई है आस की चुप्पी में। इसका पहला पाठ रामनारायण उपाध्याय की व्यंग्य कहानी है - नगर की नाक के नीचे। नगर के मध्य स्थित इमारत में रहने के लिए एक युवा डॉक्टरनी के आने पर वहाँ आए परिवर्तन का व्यंग्यात्मक चित्रण कहानी में हुआ है। दूसरा पाठ मलयालम-अंग्रेज़ी के कवि सच्चिदानंदन की कविता का हिंदी अनुवाद है। कविता का शीर्षक है विरोधाभास। ज़िंदगी में हम चाहते कुछ हैं, होते कुछ और हैं। हमारी इच्छाएँ कुछ होती हैं और उनसे नितांत भिन्न अवस्थाओं से हम गुज़रते हैं। इकाई के चौथे पाठ के रूप में हिंदी व्याकरण के अविकारी शब्द भेद विस्मयादि बोधक का परिचय दिया गया है। इकाई के अंतिम पाठ के रूप में हिंदी गद्य साहित्य की नवीन विधाओं - यात्रा वृत्तांत, संस्मरण और रेखाचित्र पर टिप्पणी है।

अधिगम उपलब्धियाँ

- अनूदित साहित्य से परिचय पाकर अनूदित रचनाओं का संकलन करता है।
- अनूदित कविता का आस्वादन करके व्याख्या प्रस्तुत करता है।
- व्यंग्य साहित्य की शैली पहचानकर टिप्पणी लिखता है।
- व्यंग्य कहानी के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- विस्मयादि बोधक की अवधारणा पाकर प्रयोग करता है।
- संस्मरण और रेखाचित्र का भाषागत एवं शैलीगत अंतर पहचानकर टिप्पणी लिखता है।
- रिपोर्ताज की शैली की अवधारणा पाकर टिप्पणी लिखता है।

विरोधाभास

सुबह, मैं अपने कान लगाता हूँ चिड़ियों का गान सुनने
पड़ोस के वार्ड में हृदय-रोगी की
आखिरी चीख मैं सुनता हूँ
दोपहर, मैं दोस्त का पत्र लानेवाले डाकिए की प्रतीक्षा करता हूँ
कड़वी दवाओं का पर्चा लेकर
डॉक्टर अंदर आता है
शाम, मैं राह देखता हूँ पत्नी की, सेब लिए
अँधेरा अकेलापन खामोशी
से कमरे में घुसता है
देर शाम मैं प्रतीक्षा करता हूँ ईश्वर की
एक शराबी, किसी झगड़े में सिर फुड़वाकर
गालियाँ बकता जाता है
रात, मैं राह देखता हूँ मृत्यु की
मेरी छोटी लड़की एक संतरा मेरी ओर बढ़ाती है।

सच्चिदानंदन
अनुवादक : राजेंद्र घोड़पकर

सच्चिदानंदन मलयालम और अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध कवि, कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में रचनाएँ अनूदित हैं । वे साहित्य अकादमी के सचिव थे । वे आलोचक, नाटककार, संपादक और अनुवादक भी हैं। उनका जन्म कोडुङल्लूर (केरल) में हुआ था। उनकी प्रमुख रचनाएँ ‘सच्चिदानंदन्टे कवितकल’, ‘अपूर्णम’, ‘गज़लुकल’, ‘अनंतम’ (कविता), ‘पटवुकल’, ‘मुहूर्तङल, ‘किषक्कुम पडिञारुम’ (गद्य)।

अनूदित रचनाएँ- अंधा आदमी जिसने सूर्य खोजा, अपूर्णा और अन्य कविताएँ, हकलाहट, वह जिसे सब याद था।

मेरी खोज

- कविता से संज्ञा शब्द छाँटकर लिखें:-
  जैसे : चिड़िया

अनुवर्ती कार्य

- घटनाओं का सही मिलान करें:-

कवि की प्रतीक्षा	विरोधाभास
चिड़ियों का गाना सुनना	गालियाँ बकते जाते शराबी
डाकिए की प्रतीक्षा	हृदय रोगी की आखिरी चीख
पत्नी की प्रतीक्षा	पर्चा लेकर डॉक्टर का आगमन
ईश्वर का इंतज़ार	संतरा लेकर लड़की का आगमन
मृत्यु की प्रतीक्षा	अंधेरा अकेलापन खामोशी

➤ निम्नलिखित कवितांश की विश्लेषणात्मक-टिप्पणी लिखें।

“देर शाम मैं प्रतीक्षा करता हूँ ईश्वर की
एक शराबी, किसी झगड़े में सिर फुड़वाकर
गालियाँ बकता जाता है
रात, मैं राह देखता हूँ मृत्यु की
मेरी छोटी लड़की एक संतरा मेरी ओर बढ़ाती है।”

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
पंक्तियों का विश्लेषण किया है।			
अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है।			
पंक्तियों के विचार से अपने विचार की तुलना की है।			

एक नज़र

कवि अपनी इच्छाओं और यथार्थ के अंतरों को दिखाना चाहते हैं। चिड़िया के गाने के बदले रोगी की चीख-पुकार, पत्र के बदले दवाओं का पर्चा आता है। अंत में कवि मृत्यु की प्रतीक्षा में है तभी जीने की प्रतीक्षा बढ़ाती हुई बच्ची संतरा लेकर आती है।

प्रसंगार्थ

आखिरी चीख	-	अंतिम आर्तनाद
कड़वी	-	bitter
पर्चा	-	चीट/कागज़
राह देखना	-	प्रतीक्षा करना
खामोशी	-	चुप्पी, silence
घुसना	-	प्रवेश करना
राह	-	रास्ता

नगर की नाक के नीचे

नगर के मध्य में नाक की तरह खड़ी उस विशाल राउण्ड बिल्डिंग में रहने के लिए जब एक युवा डॉक्टरनी ने प्रवेश किया तो समूचे भवन में एक नयी ज़िंदगी आ गई।

जो कभी दूसरे दिन भी शेव नहीं करते थे, वे नित्य शेव करने लगे। दफ़्तर में जाने से पूर्व हर कोई टाई में गाँठ लगाता, बूटों पर पॉलिश करता, कोट का कॉलर सँवारता और बालों में कंघा कर चुकने के बाद भी एक-दो बार आईने में अपनी शक्ल बिना निहारे नहीं रहता था। जो बाबू रोज़ दफ़्तर में देरी से पहुँचने के लिए बदनाम था वह ठीक समय पर ऑफिस पहुँचने लगा और जो प्रोफेसर महोदय आठ बजे से पूर्व कभी सोकर नहीं उठते थे अब वे सात बजे उठकर अपने दरवाज़े की दहलीज पर खड़े होकर 'गुड मार्निंग डॉक्टर' कहने में गौरव अनुभव करते थे। जिस दिन वे ऐसा नहीं कर पाते उस दिन उन्हें कुछ ऐसा लगता, जैसे आज का सवेरा अच्छा सवेरा नहीं हुआ।

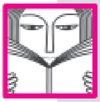

वे लोग आइने में अपने शक्ल बिना निहारे नहीं रहते थे - क्यों?

उस भवन में वह युवा डॉक्टरनी क्या आ गई, मानो एक ऐसा दर्पण आ गया हो, जिसके सामने से गुज़रते वक्त, हर किसी का मन सजने-सँवरने के लिए ललक उठता है।

यद्यपि उसे आए एक सप्ताह बीत चुका था लेकिन अभी तक भी उससे किसीने मिलने-बोलने का साहस नहीं किया था। यह चुप्पी और भी न जाने कितने दिन चलती लेकिन इसी बीच एक अप्रत्याशित घटना घटी।

एक दिन सुबह उठने पर लोगों ने देखा, लिफ्ट में एक सूचना टँगी थी। लिखा था-

'कल ऑफिस जाते समय गलती से मेरा एक दस रुपए का नोट लिफ्ट में गिर गया था, यदि वह किसी सज्जन को मिला हो, और वे उसे मुझ तक पहुँचा सकें तो मैं उनकी हृदय से कृतज्ञ होऊँगी।'

अभी इस सूचना को लगे कुछ घंटे भी नहीं बीते थे कि एक सज्जन आए और बोले, "माफ़ कीजिएगा डॉक्टर! कल सुबह ऑफिस जाते समय मुझे एक दस रुपए का नोट लिफ्ट में पड़ा मिल गया था। उसके मालिक का ठीक-ठीक पता ज्ञात नहीं होने से मैंने उसे रात-भर अपने संग रखा। आज लिफ्ट में लगी आपकी सूचना पढ़कर वह अमानत आपको सौंपने आया हूँ। आशा है इस विलंब के लिए क्षमा करेंगी।"

और उन्होंने वह दस रुपए का नोट डॉक्टरनी को सौंप दिया।

उसके करीब आधे घंटे के पश्चात् एक और महाशय ने द्वार खट-खटाया।

पूछा - "कौन है?"
बोले - "जी, मैं इस नगर का पत्रकार हूँ और आपकी सूझ की दाद देने केलिए आया हूँ। कल सुबह जब मैं न्यूज़ की टोह में निकला था तो मुझे बजाय न्यूज के, लिफ्ट में एक दस का नोट पड़ा दिखा था। एक क्षण के लिए मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह न्यूज़ है या नोट। लेकिन दूसरे ही क्षण ख्याल आया कि कहीं यह बढ़िया खबर किसी दूसरे संवाददाता के हाथों में न पड़ जावे। अतएव मैंने उसे उठा लिया, और अब आज आपकी रकम आपके हाथों सौंपते हुए मुझे एक विशेष आनंद का अनुभव हो रहा है।"

यह बढ़िया खबर किसी दूसरे संवाददाता के हाथ में न पड़ जावे - यहाँ पत्रकार का कौन सा मनोभाव प्रकट हुआ है?

डॉक्टरनी ने उन्हें धन्यवाद दिया और ऑफिस जाने की तैयारी में संलग्न हो उठी। इसी बीच उसने देखा, उस भवन के मालिक एक विशाल-काय सेठजी उसके कमरे की ओर बढ़े चले आ रहे थे।
नज़दीक आकर उन्होंने अपने दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा - "हें, हें, क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"
वे बोलीं - "आइए। मेरे लायक सेवा?"
बोले - "हें, हें, सेवा तो मैं ही करने आयो हूँ। कल बड़ी फजर जद मैं दुकान जा रह्यो थो, तो लिफ्ट में पाँव धरते ही म्हांका पगा तले खुड़-खुड़ हुई। पैलम तो मैं एकदम घबड़ायो किया

कई बलाय है। पण जद झुकी ने देख्यो तो वाँ लक्ष्मी जी पड़्या था। म्हें तो बाने नी उठातो पण लक्ष्मी जी को पगा तले पड़ी देखकर म्हांका मन काँप उठ्यो और म्हने वाने उठा लियो। आज दिन उगे जब थाँकी लोटिस पढ़ी तो मनथिर हुयो और थाँकी रकम थाँका सुपरद लगवाणो आयो हूँ।” इतना कहकर वह दस का नौट तथा ‘जरा हुशयारी से रह्या करो वाई जी’ का उपदेश देते हुए जैसे आये थे वैसे ही, हें - हें करते हुए वापस भी चले गए।*

यह सिलसिला और भी जाने कितने दिन चलता, यह तो पता नहीं, लेकिन दूसरे दिन लोगों ने देखा,लिफ्ट में एक दूसरी सूचना टँगी थी लिखा था-

‘कल शाम तक मेरे पास दो सौ के नोट आ चुके हैं। मैंने सुना है इस भवन में करीब 50 कमरे हैं। यदि आज के दिन और रुक जाती तो यह संख्या 500 तक तो आसानी से पहुँच सकती थी। लेकिन मुझे दुःख के साथ सूचित करना पड़ता है कि कल मैंने जिस नोट के गुमने की सूचना लिखी थी, मेरा वह नोट,

---

* ‘ही ही, सेवा तो मैं ही करने आया हूँ। कल बड़ी जल्दबाज़ी में मैं दूकान जा रहा था, तो लिफ्ट में पाव रखते ही मेरे पैरों तले रपटन महसूस हुआ। पहले तो मैं एकदम घबरा गया कि यह क्या बला है। पर जब झुककर देखा तो वहाँ लक्ष्मी जी पड़ी थी। मैं उसे वैसे तो नहीं उखाड़ा, मगर लक्ष्मी जी को पाँव तले पड़ी देखकर मेरा मन काँप उठा और मैंने उसे उठा लिया। आज सबेरे जब आपकी नोटिस पढ़ी मन सब्र हुआ और आपका रकम आपके सुपुर्द करने आया हूँ।’ इतना कहकर वह दस का नोट तथा ‘ज़रा होशियारी से रहिए भाभीजी’ का उपदेश देते हए जैसे आए थे वैसे ही, हें-हें करते हुए वापस भी चले गए।

मेरे ही मनीबेग के दूसरे खाने में मिल गया है। अतएव जिन्होंने मेरे इस बिना गुमे हुए नोट को खोजने में मदद पहुँचाई है उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। साथ ही, मैं यह भी बता देना चाहती हूँ कि चूँकि मैं कल सुबह ही इस भवन को खाली करने जा रही हूँ, अतएव जिनकी भी रकम मेरे पास है वे आज शाम तक उसे वापस ले जा सकते हैं अन्यथा कल सुबह मैं, उसे अस्पताल के चंदे में जमा करा दूँगी।'

कहते हैं, उसके बाद एक भी व्यक्ति अपनी रकम वापस लेने नहीं आया।

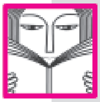

एक भी व्यक्ति अपनी रकम वापस लेने नहीं आया, क्यों?

रामनारायण उपाध्याय

हिंदी के प्रमुख व्यंग्य रचनाकार रामनारायण उपाध्याय का जन्म 02 मई 1918 को खालमुखी, खंडवा (मध्यप्रदेश) में हुआ था। उनकी प्रमुख व्यंग्य रचनाएँ हैं–बक्शीशनामा, नाक का सवाल, मुस्कुराती फाइलें, दूसरा स्मरण आदि। 'नगर की नाक के नीचे' मुस्कुराती फ़ाइलें व्यंग्य संग्रह से लिया गया है। व्यंग्य के अलावा निबंध, रिपोर्ताज, लघुकथाएँ, रूपक, संस्मरण, लोकसाहित्य आदि विधाओं में भी वे सिद्धहस्त हैं।

मेरी खोज

➤ पाठभाग से गुजराती और अंग्रेज़ी के पाँच-पाँच शब्द छाँटकर लिखें।

अंग्रेज़ी	गुजराती
राउण्ड बिल्डिंग	बलाय
....	....
....	....
....	....

अनुवर्ती कार्य

- घटनाओं को क्रमबद्ध करके लिखें।
    - डॉक्टरनी के पास पत्रकार का आना
    - लिफ्ट में टँगी हुई कृतज्ञता ज्ञापन
    - युवा डॉक्टरनी का आगमन
    - सेठजी से मुलाकात
    - दस रुपए नोट की सूचना
    - सज्जन द्वारा रुपए सौंपना
    - बिल्डिंग के लोगों के व्यवहार में परिवर्तन

- इस अनोखी घटना के बारे में डॉक्टरनी अपनी सहेली को एक पत्र लिखती है। वह पत्र कल्पना करके लिखें।

- सरकारी अस्पतालों में सुविधा बढ़ाने की आवश्यकता सूचित करते हुए एक संपादकीय तैयार करें।

    - सरकारी अस्पतालों का वर्तमान हाल
    - आम जन का आश्रय
    - भलेमानसों से चंदा जमाना
    - सरकार की ओर से विशेष ध्यान

प्रसंगार्थ

समूचे	-	सारे
टाई में गाँठ लगाना	-	टाई बाँधना
सँवारना	-	सुधारना
शक्ल	-	रूप
दहलीज	-	द्‌वार की चौखट में नीचेवाली लकड़ी
ललक उठना	-	ललचना
सूचना	-	notice
टाँगना	-	लटकना
संग रखना	-	पास रखना
अमानत	-	धरोहर
विलंब	-	देर
दाद देना	-	प्रशंसा करना
टोह	-	तलाश
संवाददाता	-	रिपोर्टर
संलग्न	-	जुड़ा हुआ
फजर	-	सबेरा
जद	-	जब/जब कभी
पाँव धरना	-	पाँव रखना
लोटिस	-	नोटीस
रकम	-	रुपया
गुम	-	खोया हुआ
अन्यथा	-	नहीं तो

विस्मयादि बोधक

जिन शब्दों से हर्ष, शोक, विस्मय, ग्लानि, घृणा, लज्जा आदि भाव प्रकट होते हैं वे विस्मयादि बोधक कहलाते हैं। इन्हें 'द्योतक' भी कहते हैं।

इसके भेद हैं–

- विस्मय सूचक - अरे, क्या, सच, ओहो
- हर्ष सूचक - वाह, अहा, शाबाश
- शोक सूचक - आह, ओह
- स्वीकार सूचक - ठीक, अच्छा
- तिरस्कार सूचक - छि, हट
- अनुमोदन सूचक - हा हा, ठीक ठीक
- आशीर्वाद सूचक - जय हो
- संबोधन सूचक - हे, रे, अरे, अरी

अनुवर्ती कार्य

➤ संवाद पढ़ें।

राजी : अरे! यह कौन... सुनिता?

सुनिता : हे! राजी... तुम इधर?

राजी : मैं इधर ही काम करती हूँ।

सुनिता : तुम्हें नौकरी मिल गई? शाबाश...

राजी : तुझे नौकरी मिली है क्या?

सुनिता : मैं इधर एस.बी.आई की प्रबंधक हूँ।

राजी : हा हा, बहुत अच्छा। घर पर सब ठीक है न?

सुनिता : अभी कुछ दिन पहले एक दुर्घटना में पिताजी की मृत्यु हुई।

राजी : ओह... बड़े दुख की बात है।

सुनिता : तेरे घर पर सब खैरियत है न?

राजी : हाँ... बिलकुल।

राजी : अच्छा।

- दिए गए संवाद से विस्मय, शोक, हर्ष आदि को सूचित करनेवाले शब्दों को रेखांकित करें।
  जैसे - अरे, वाह, आह आदि

- रेखांकित शब्दों को सही खंभे में भरें।

विस्मय और हर्ष को सूचित करनेवाले	**शोक और स्वीकार को सूचित करनेवाले**	**तिरस्कार और अनुमोदन को सूचित करनेवाले**	**आशीर्वाद और संबोधन को सूचित करनेवाले**

- उपर्युक्त संवाद को भावयुक्त ढंग से कक्षा में प्रस्तुत करें।

साहित्य का इतिहास

यात्रावृत्त

'यात्रावृत्त' शब्द का अर्थ है, 'यात्रा के वृत्तांत'। इसमें मनुष्य के द्वारा भोगी हुई यात्रा के अनुभवों को कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ कल्पना केलिए ज़्यादा गुंजाइश नहीं है। इसमें बीते हुए यथार्थ का वर्णन होता है। जीवन को भी एक यात्रा माना गया है। इसमें चलते रहने का क्रम बना रहता है। सौंदर्य भावना के विकास के साथ-साथ यायावरी की प्रवृत्ति और विकसित होती रही। बदलते हुए स्वरूप ने यात्रा को बढ़ावा दिया। सांस्कृतिक आदान-प्रदान, राजनैतिक कार्य, शिक्षा-प्राप्ति, प्रकृति की रमणीयता आदि इसी मूल में है।

यात्रावृत्त में लेखक की दृष्टि तथ्यों की ओर अधिक होती है। लेखक भूगोल और इतिहास-लेखन की शैली का आश्रय न लेकर कथा-साहित्य की सरल, सहज, सरस भाषा शैली को अपनाता है, रोचकता यात्रा-वृत्तांत का अनिवार्य गुण है। संवेदनशीलता ही इसे साहित्यिक कृति का रूप देती है।

संस्मरण और रेखाचित्र

'संस्मरण' शब्द का अर्थ है, ठीक ढंग से स्मरण करना'। लेखक के अतीत की स्मृतियाँ उसके अनुभूत सत्यों के माध्यम

से प्रकट की जाती है। अतः कल्पना के साथ लेखक की मनोदशा और उसके यथार्थ का अनुभव भी संस्मरण में सम्मिलित होता है। रेखाचित्र अंग्रेज़ी के 'स्केच' शब्द चित्रकला के क्षेत्र से संबंधित है। रेखाचित्र चित्रशैली का एक प्रकार है। चित्रांकन की दृष्टि से यह कहानी से मिलती-जुलती विधा है। संस्मरण और रेखाचित्र के बीच की विभाजक रेखा बहुत सूक्ष्म है, प्रायः इनका रूप परस्पर अंतर्भूत दिखाई देता है। परंतु इनके मध्य अंतर स्थापित किया जा सकता है।

रेखाचित्र में व्यक्तित्व की स्पष्ट और बहुत कुछ स्थिर रूप देखने की चेष्टा की जाती है। संस्मरण व्यक्ति को गत्यात्मक रूप में प्रस्तुत करना चाहता है; व्यक्ति के अतिरिक्त बाह्य घटनाओं को भी महत्व देता है। इसलिए संस्मरण का पात्र विशिष्ट घटनाओं को भी महत्व देता है। अपनी प्रकृति में रेखाचित्र किसी सीमा तक संस्मरणात्मक होगा पर संस्मरण में रेखाचित्र निहित हो, यह आवश्यक नहीं। रेखाचित्र की विशिष्टता इस बात में है कि वह परंपरागत नायक को हटाकर उसके स्थान पर सामान्य व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा करता है। संस्मरणों की भाषा अभिधापरक होती है लेकिन रेखाचित्रों की भाषा ध्वनि या संकेतप्रधान होती है।

रिपोर्ताज

'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। इसकी गणना नव्यतम साहित्य-रूपों के अंतर्गत की जाती है। जिस रचना में वर्ण्य

विषय का आँखों-देखा तथा कानों-सुना विवरण प्रस्तुत किया जाए कि पाठक की हृद्तंत्री के तार झंकृत हो उठे और वह उसे भूल न सके, उसे रिपोर्ताज कहते हैं। रिपोर्ट से यह इस अर्थ में भिन्न है कि उसमें जहाँ कलात्मक अभिव्यक्ति का अभाव होता है। तथा तथ्यों का लेखा-जोखा मात्र रहता है, वहाँ रिपोर्ताज़ में तथ्यों को कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक ढंग से व्यक्त किया जाता है। रिपोर्ताज लेखक घटना की प्रामाणिकता को बहुत महत्व देता है। सहृदयता ही रिपोर्ताज को सामान्य समाचार से अलग करती है। घटनाओं की कथ्यात्मक प्रस्तुति इसकी विशेषता है।

अनुवर्ती कार्य

- यात्रावृत्त में लेखक की भूमिका क्या है?
- संस्मरण और रेखाचित्र का अंतर क्या-क्या है?
- रिपोर्ताज की खूबियाँ पठित पाठभाग के आधार पर व्यक्त करें।

अतिरिक्त वाचन सामग्री

यह पाठ्यपुस्तक हिंदी के विभिन्न साहित्यिक एवं व्यावहारिक विधाओं की संगम स्थली है। अतिरिक्त वाचन के लिए कुछ सामग्रियाँ यहाँ दी गई हैं। इसके अलावा पुस्तकालय तथा अंतर्जाल की मदद भी लें।

खेल

जैनेन्द्रकुमार

मौन मुग्ध संध्या स्मित प्रकाश से हँस रही थी। उस समय गंगा के निर्जन बालुकास्थल पर एक बालक और एक बालिका, अपने को और सारे विश्व को भूल, गंगातट के बालू और पानी को अपना एकमात्र आत्मीय बना उनसे खिलबाड़ कर रहे थे।

प्रकृति इन निर्दोष परमात्म-खण्डों को निस्तब्ध और निर्निमेष निहार रही थी। बालक कहीं से एक लकड़ी लाकर तट के जल को छटाछट उछाल रहा था। पानी मानो चोट खाकर भी बालक से मित्रता जोड़ने के लिए विह्वल हो उछल रहा था। बालिका अपने एक पैर पर रेत जमाकर और थोप-थोपकर एक भाड़ बना रही थी।

बनाते-बनाते भाड़ से बालिका बोली, “देख, ठीक नहीं बना, तो मैं तुझे फोड़ दूँगी।” फिर बड़े प्यार से थपका-थपकाकर उसे ठीक करने लगी। सोचती जाती थी - इसके ऊपर में एक कुटी बनाऊँगी- वह मेरी कुटी होगी : और मनोहर? - नहीं, वह कुटी में नहीं रहेगा, बाहर खड़ा-खड़ा भाड़ में पत्ते झोंकेगा। जब वह हार जाएगा, बहुत कहेगा, तब मैं फिर उसे अपनी कुटी के भीतर ले लूँगी।

मनोहर उधर पानी से हिल-मिलाकर खेल रहा था। उसे क्या मालूम कि यहाँ अकारण ही उस पर रोष और अनुग्रह किया जा रहा है।

बालिका सोच रही थी - मनोहर कैसा अच्छा है, पर वह दगंई बड़ा है। हमें छेड़ता ही रहता है। अबके दंगा करेगा तो हम उसे कुटी में साझी नहीं करेंगे। साझी होने को कहेगा तो उससे शर्त करवा लेंगे तब साझी करेंगे।

बालिका को अचानक ध्यान आया-भाड़ की छत तो गरम होगी। उस पर मनोहर रहेगा कैसे? मैं तो रह जाऊँगी। पर मनोहर बिचारा कैसे सहेगा? फिर सोचा-उससे मैं कह दूँगी, भई, छत बहुत तप रही है, तुम चलोगे, तुम मत जाओ। पर वह अगर नहीं माना? मेरे पास होने को वह आया ही-तो? तो कहूँगी-भई ठहरो, मैं ही बाहर आती हूँ-पर वह मेरे पास आने की जिद करेगा क्या?... जरूर करेगा, वह बड़ा हठी है। .... पर मैं आने नहीं दूँगी' बेचारा तपेगा ...... भला कुछ ठीक है। ज्यादा कहेगा, मैं धक्का दे दूँगी और कहूँगी-अरे, जल जाएगा मूरख! यह सोचने पर उसे बड़ा मजा-सा आया, पर उसका मुँह सूख गया। उसे मानो सचमुच ही धक्का खाकर मनोहर के गिरने का अद्‌भुत और करुण दृश्य घटित की भाँति प्रत्यक्ष हो गया।

बालिका ने दो-एक पक्के हाथ भाड़ पर लगाकर देखा। भाड़ अब बिलकुल बन गया था। मां जिस सतर्क सावधानी के साथ अपने को हटाकर नवजात शिशु को बिछौने पर लेटा छोड़ती है, वैसे ही सुरबाला ने अपना पाँव धीरे-धीरे भाड़ के नीचे से खींचना शुरू किया। धीरे-धीरे, धीरे-धीरे। इस क्रिया में वह सचमुच भाड़ को पुचकारती-सी जाती थी। उसके पैर ही पर तो भाड़ टिका है। पैर का आश्रय हट जाने पर बेचारा कहीं टूट न पड़े। पैर साफ निकालने पर भाड़ जब ज्यों-का त्यों टिका रह गया, तब बालिका एक बार आह्लाद से नाच उठी।

बालिका एकबारगी ही बेवकूफ मनोहर को इस अलौकिक कारीगरी वाले भाड़ के दर्शन के लिए दौड़कर खींच लाने को उद्यत हो गई। मूर्ख लड़का पानी से उलझ रहा है। यहाँ कैसी जबर्दस्त कार-गुजारी हुई है, सो नहीं देखता। ऐसा पक्का भाड़ उसने कहीं देखा भी है!

पर सोचा-अभी नहीं, पहले कुटी तो बना लूँ। यह सोचकर बालिका ने रेत की एक चुटकी ली और बड़े धीरे से भाड़ के सिर पर छोड़ दी। फिर दूसरी, फिर तीसरी, फिर चौथी। इस प्रकार चार चुटकी रेत धीरे-धीरे छोड़कर सुरबाला ने भाड़ के सिर पर अपनी कुटी तैयार कर ली।

भाड़ तैयार हो गया। पर पड़ोस का भाड़ जब बालिका ने पूर-पूरा याद किया तो पता चला, एक कमी रह गई : धूआँ कहाँ से होकर निकलेगा? तनिक सोचकर उसने एक सींक टेड़ी करके उसके शीर्ष पर गाड़ दी बस ब्रह्मांड की सबसे संपूर्ण संपदा और विश्व की सबसे सुंदर वस्तु तैयार हो गई।

वह उस उजड्ड मनोहर को इस अपूर्व स्थापत्य का दर्शन कराएगी, पर अभी जरा थोड़ा देख तो ले और। सुरबाला मुँह बाए आँखें स्थिर करके इस भाड़-श्रेष्ठ को देख देखकर विस्मित और पुलकित होने लगी। परमात्मा कहाँ विराजते हैं, कोई इस बाला से पूछे, तो बताये इस भाड़ के जादू में।

मनोहर अपनी सुरी-सुरो-सुर्री की याद कर पानी से नाता तोड़, हाथ को लकड़ी को भरपूर जोर से गंगा की धारा में फेंककर जब मुड़ा, तब श्री सुरबाला देवी एकटक अपनी परमात्मलीला के जादू को बूझने और सराहने में लगी हुई थीं।

मनोहर ने बाला की दृष्टि का अनुकरण कर देखा - देवीजी बिलकुल अपने भाड़ में अटकी हुई है। उसने जोर से कहकहा लगा-कर एक लात में भाड़ का काम तमाम कर दिया।

न जाने क्या किला फतह किया हो, ऐसे गर्व से भरकर निर्दयी मनोहर चिल्लाया - सुर्रो रानी!

सुर्रो रानी मूक खड़ी थीं उनके मुँह पर जहाँ अभी एक विशुद्ध रस था, वहाँ अब एक शून्य फैल गया। रानी के सामने साक्षात् एक स्वर्ग आ खड़ा हुआ था। वह उन्हीं के हाथ का बनाया हुआ या और वे किसी एक को उसकी एक-एक मनोरमता और स्वर्गीयता का दर्शन कराना चाहती थीं हा, हंत! वही व्यक्ति आया और उसने अपनी लात से उसे तोड़ फोड़ डाला! रानी हमारी बड़ी व्यथा से भर गई।

हमारे विद्वान पाठकों में से कोई होता तो उन मूर्खों को समझाता-संसार यह भंगुर है। इससे दुःख क्या और सुख क्या! जो जिससे बना है उसे उसी में लय हो जाना है। इसमें शोक और उद्वेग की क्या बात है? यह संसार जल का बुदबुदा है; फूटकर एक समय जल में ही खो जाना उसकी सार्थकता है। जो इतना नहीं समझते वे........ वृथा है। री मूर्ख, लड़की, तू समझ! सब ब्रह्मांड ब्रह्ममय है। उसी में लीन हो जाने के अर्थ है। इससे तू किस लिए व्यर्थ व्यथा सह रही है? रेत का तेरा भाड कुछ था भी? मन का तमाशा था। बस हुआ, और लुप्त हो गया। रेत में से होकर रेत में मिल गया। इस पर खेद मत कर, इससे शिक्षा ले जिसने लात मारकर उसे तोड़ा है, वह तो परमात्मा का साधन-मात्र है परमात्मा तुझे गम्भीर शिक्षा देना चाहते है।

लड़की तू मूर्ख क्यों बनती है? परमात्मा की इस शिक्षा को समझ और उस द्वारा उन तक पहूँचने का प्रयास कर आदि-आदि।

पर बेचारी बालिका का दुर्भाग्य, पर कोई विज्ञ श्रीमान् पंडित तत्वोपदेश के लिए उस गंगा-तट पर नहीं पहूँच सके। हमें तो यह भी संदेह है कि सुर्री एकदम इतनी जड़ मूर्ख है कि यदि कोई परोपकार-रत पंडित परात्मनिर्देश से वहाँ पहूँचकर उपदेश भी देने लगते, तो वह उनकी बात को समझती तो क्या, सुनती तक नहीं। शायद मुँह बिचका रहती। पर, अब तो वहाँ निरबुद्धि, शठ मनोहर के सिवा कोई नहीं है, और मनोहर विश्वतत्व की एक भी बात नहीं जानता। उसका मन जाने कैसा हो रहा है। कोई जैसे उसे भीतर ही भीतर मसोसकर निचोड़े डाल रहा है। लेकिन उसने बनकर कहा, "सुरो, दुत पगली! रूठती क्यों है?

सुरबाला, वैसी ही खड़ी रही।

"सुरी, रुठती क्यों है?

बाला तनिक न हिली।

"सुरी! सुरी!... सुरो"

अब बनना न हो सका। मनोहर की आवाज हठात् कंपी-सी निकली।

सुरवाला अब और मुँह फेरकर खड़ी हो गई। स्वर के इस कंपन का सामना शायद इससे न हो सका:

"सुरी... ओ सुरिया! मैं मनोहर हूँ ... मनोहर। मुझे मारती नहीं?

यह मनोहर ने उसके पीठ पीछे से कहा और ऐसे कहा, जैसे वह यह प्रकट करना चाहता है कि वह रो नहीं रहा है।

"हम नहीं बोलते।" बालिका से बिना बोले रहा न गया। उसका भाड़ शायद शून्य में विलीन हो गया। उसका स्थान और बाला को सारी दुनिया का स्थान-काँपती हुई मनोहर की आवाज ने ले लिया।

मनोहर ने बड़ा बल लगाकर कहा, "सुर्री, मनोहर तेरे पीछे खड़ा है। वह बड़ा दुष्ट है। बोल मत, पर उस पर रेत क्यों नहीं फेंक देती, मार क्यों नहीं देती? उसे एक थप्पड़ लगा-वह अब कभी कसूर नहीं करेगा।"

बाला ने कड़ककर कहा, "चुप रहो जी!"

"चुप रहता हूँ, पर मुझे देखोगी भी नहीं?"

"नहीं देखती।"

"अच्छा मत देखो। मत ही देखो। मैं अब कभी सामने न आऊँगा, मैं इसी लायक हूँ।

“कह दिया तुमसे, तुम चुप रहो। हम नहीं बोलते।”

बालिका में व्यथा और क्रोध कभी का खत्म हो चुका था। वह तो पिघलकर वह चुका था। यह कुछ और ही भाव था। यह एक उल्लास था जो व्याजकोप का रूप धर रहा था। दूसरे शब्दों में यह स्त्रीत्व था।

मनोहर बोला, “लो सुर्री, मैं नहीं बोलता। मैं बैठ जाता हूँ। यहीं बैठा रहूँगा। तुम जब तक न कहोगी, न अठूँगा, न बोलूँगा।”

मनोहर चुप बैठ गया। कुछ क्षण बाद हारकर सुरबाला बोली, “हमारा भाड़ क्यों तोड़ा जी? हमारा भाड़ बना के दो।”

“लो, अभी लो।”

“हम वैसा ही लेगे।”

“वैसा ही लो, उससे भी अच्छा।”

“उसपे हमारी कुटी थी, उसपे धुएँ का रास्ता था।”

“लो सब लो। तुम बताते जाओ, मैं बनाता जाऊँ।”

“हम नहीं बताएँगे। तुमने क्यों तोड़ा? तुमने तोड़ा, तुम्हीं बनाओ!”

"अच्छा, पर तुम इधर देखो तो!"

"हम नहीं देखते, पहले भाड़ बनाके दो।"

मनोहर ने तभी खुशी-खुशी एक भाड़ बनाकर तैयार किया। कहा, "लो, भाड़ बन गया।"

"बन गया?"

"हाँ।"

"धुएँ का रास्ता बनाया। कुटी बनाई।"

"सो कैसे बनाऊँ - बताओ तो!"

"पहले बनाओ, तब बताऊँगी।"

भाड़ के सिर पर एक सींक लगाकर और एक-एक पत्ते की ओट लगाकर कहा; "बना दिया।"

तुरन्त मुड़कर सुरबाला ने कहा, "अच्छा दिखाओ।"

"सींक ठीक नहीं लगी जी" "पत्ता ऐसे लगेगा" आदि-आदि संशोधन कर चुकने पर मनोहर को हुक्म हुआ -

"थोड़ा पानी लाओ, भाड़ के सिर पर डालेगे।"

मनोहर पानी लाया।

गंगाजल से कर-पात्रों द्वारा वह भाड़ का अभिषेक करना ही चाहता था कि सुर्री रानी ने एक लात से भाड़ के सिर को चकना-चूर कर दिया।

सुरबाला रानी हँसी से नाच उठी। मनोहर उत्फुल्लित से कहकहा लग उस निर्जन प्रान्त में वह निर्मल शिशु-हास्य-रव लहरें लेता हुआ व्याप्त हो गया। सूरज महाराज बालकों जैसे लाल-लाल मुँह से गुलाबी-गुलाबी हँसी रहे थे। गंगा मानो जान-बूझ कर किलकारियाँ मार रही थीं।

और-और वे लम्बे ऊँचे-ऊँचे दिग्गज पेड़ दार्शनिक पंडितों की भाँति सब हास्य की सारी-शून्यता पर मानो मन-ही-मन गंभीर तत्वालोचन कर हँसी में भूले हुए मूर्खें पर थोड़ी दया बख़्शाना चाह रहे थे।

गूँगे

डा. रांगेय राघव

"शकुन्तला क्या नहीं जानती?"

"कौन? शकुन्तला! कुछ भी नहीं जानती।"

क्यों साहब? क्या नहीं जानती? ऐसा क्या काम है जो वह नहीं कर सकती?

"वह उस गूँगे को नहीं बुला सकती।"

"अच्छा, बुला दिया तो?"

"बुला दिया!"

बालिका ने एक बार कहनेवाली की ओर द्वेष से देखा और चिल्ला उठी-दूँदे!

गूँगे ने नहीं सुना। तमाम स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं बालिका ने मुँह छिपा लिया।

जन्म से वज्र बहरा होने के कारण वह गूँगा है। उसने अपने कानों पर हाथ रखकर इशारा किया। सब लोगों को उसमें दिलचस्पी पैदा हो गई, जैसे तोते को राम-राम कहते सुनकर उसके प्रति हृदय में एक आनन्दमिश्रित कुतूहल उत्पन्न हो जाता है।

चमेली ने उँगलियों से इंगित किया-फिर?

मुँह के आगे ईशारा करके गूँगे ने बताया-भाग गई। कौन? फिर समझ में आया। जब छोटा ही था तब 'माँ', जो घूँघट काढ़ती थी, छोड़ गई। क्योंकि 'बाप', अर्थात् बड़ी-बड़ी मूँछें, मर गया था। और फिर उसे पाला है.... किसने? यह तो समझ में नहीं आया, पर वे लोग मारते बहुत हैं।

करुणा ने सबको घेर लिया। वह बोलने की कितनी जबर्दस्त कोशिश करता है। लेकिन नतीजा कुछ नहीं, केवल कंकश कायं-कायं का ढेर। अस्फुट ध्वनियों का वमन, जैसे आदिम मानव अभी भाषा बनाने में जी-जान से लड़ रहा हो।

चमेली ने पहली बार अनुभव किया कि यदि गले में काकल तनिक ठोक नहीं हो तो मनुष्य क्या से क्या हो जाता है। कैसी यातना है कि वह अपने ह्रदयय को उगल देना चाहता है किन्तु उगल नहीं पाता।

सुशीला ने आगे बढ़कर इशारा किया-मुँह खोल! और गूँगे ने मुंह खोल दिया। लेकिन उसमें कुछ दिखाई नहीं दिया। पूछा, गले में कौआ है? गूंगा समझ गया। इशारे से हो बता दिया-किसी ने बचपन में गला साफ करने की कोशिश में काट दिया। और वह ऐसे बोलता है जैसे घायल पशु कराह उठता है। शिकायत करता है, जैसे कुत्ता चिल्ला रहा हो; और कभी-कभी उसके स्वर में ज्वालामुखी के विस्फोट की सी भयानकता थपेड़ें मार

उठती है। वह जानता है कि वह सुन नहीं सकता। और बताकर मुस्कराता है। वह जानता है कि उसकी बोली को कोई नहीं समझता, फिर भी बोलता है।

सुशीला ने कहा, "इशारे गज़ब के करता है। अक्ल बहुत तेज़ है"

पूछा, 'खाता क्या है, कहाँ से मिलता है?'

वह कहानी ऐसी है जिसे सुनकर सब स्तब्ध बैठे है। हलवाई के यहाँ रात-भर लड्डू बनाए हैं, कढाई मांजी है, नौकरी की है, कपड़े धोए हैं - सबके इशारे हैं, लेकिन...

गूंगे का स्वर चीत्कार में परिणत हो गया। सीने पर हाथ मारकर इशारा किया-हाथ फैलाकर कभी नहीं मांगा, भीख नहीं लेता; भुजाओं पर हाथ रखकर इशारा किया-मेहनत का खाता हूँ; और पेट बजाकर दिखाया - इसके लिए, इसके लिए,

अनाथाश्रम के बच्चों को देखकर चमेली रोती थी। आज भी उसकी आँखों में पानी आ गया। वह सदा से ही कोमल है। सुशीला से बोली - इसे तो नौकर भी नहीं रखा जा सकता।

पर गंगा उस समय समझा रहा था। वह दूध ले आता है। कच्चा मंगाना हो, थन काढ़ने का

इशारा कीजिए, औटा हुआ मांगाना हो, हलवाई जैसे एक बर्तन से दूध दूसरे बर्तन में उठाकर डालता है, वैसी बात कहिए। साग मगाना हो, गोल-मोल कीजिए या लम्बी उंगली दिखाकर समझाइए... और भी .... और भी....

और चमेली ने इशारा किया किन्तु हाथ से इशारा किया क्या देगी? खाना?

"हाँ," चमेली ने सिर हिलाया।

"कुछ पैसे?"

चार उंगलियाँ दिखा दीं।

गूँगे ने सीने पर हाथ मारकर जैसे कहा-तैयार हैं। चार रुपये!

सुशीला ने कहा, "पछताओगी। भला यह क्या काम करेगा?"

"मुझे तो दया आती है बिचारे पर!" चमेली ने उत्तर दिया, "न हो, बच्चों की तबीयत बहलेगी।"

घर पर बुआ मारती थी, फूफा मारता था, क्योंकि उन्होंने उसे पाला था। वे चाहते थे कि बाज़ार में पल्लेदारी करे, बारह-चौदह आने कमाकर लाए और उन्हें दे दे, बदले में वे उसके सामने बाजरे और चने की रोटियां डाल दें। अब गूँगा घर भी नहीं जाता। यहीं

काम करता है। बच्चे चिढ़ाते हैं। कभी नाराज़ नहीं होता। चमेली के पति सीधे-सादे आदमी है-पल जाएगा बेचारा। किन्तु वे जानते हैं कि मनुष्य की करुणा की भावना उसके भीतर गूँगोपन की प्रतिच्छाया है : जब वह बहुत कुछ करना चाहता हैं; किन्तु कर नहीं पाता। इसी तरह दिन बीत रहे हैं।

चमेली ने पुकारा - गूँगे!

किन्तु उत्तर नहीं आया, उठकर ढूँढा - कुछ पता नहीं लगा।

बसंता ने कहा, "मुझे तो कुछ नहीं मालूम।"

"भाग गया होगा।" पति का उदासीन स्वर सुनाई दिया। सचमुच वह भाग गया था। कुछ भी समझ में नहीं आया। चुपचाप जाकर खाना पकाने लगे। क्यों भाग गया? नाली का कीडा! एक छत उठाकर सिर पर रख दी, फिर भी मन नहीं भरा। दुनिया हँसती है, हमारे घर को अब अजायबगर का नाम मिल गया है... किसलिए?...

जब बच्चे और वे भी खाकर उठ गए तो चमेली बची रोटियाँ कटोरदान में रखकर उठने लगी। एकाएक द्‌वार पर कोई छाया हिल उठी। वह गूँगा था। हाथ से इशारा किया-भूखा हूँ।

"काम तो करता नहीं, भिखारी!" फेंक दी उसकी ओर रोटियाँ। रोष से पीठ मुडकर खड़ी हो गई। किन्तु गूँगा खड़ा रहा। रोटियाँ छुई तक नहीं। देर तक दोनों चुप रहे। फिर न जाने क्यों गूँगे ने रोटियां उठा लीं ओर खाने लगा। चमेली ने गिलासों में दूध भर दिया। देखा, गूँगा खा चुका है। उठी और हाथ में चिमटा लेकर उसके पास खडी हो गई।

"कहाँ गया था?" चमेली ने कठोर स्वर से पूछा।

कोई उत्तर नहीं मिला। अपराधी की भांति सिर झुक गया। झट से एक चिमटा उसकी पीठ पर जड़ दिया! किन्तु गूँगा रोया नहीं। वह अपने अपराध को जानता था। चमेली की आँखों से दो बूँदें ज़मीन पर टपक गई। तब गूँगा भी रो दिया!

और फिर यह भी होने लगा कि गूँगा जब चाहे भाग जाता, फिर लौट आता। उसे जगह-जगह नौकरी करके भाग जाने की आदत पड़ गई थी। और चमेली सोचती कि उसने उस दिन भीख ली थी या ममता की ठोकर को निस्संकोच स्वीकार कर लिया था।

बसंता ने कसकर गूँगे की चपत जड़ दी। गूँगे का हाथ उठा और न जाने क्यों अपने-आप रूक गया। उसकी आँखों में पानी भर आया और वह रोने लगा। उसका

रुदन इतना कर्कश था कि चमेली को चुल्हा छोडकर उठ आना पड़ा। गूँगा उसे देखकर इशारों से कुछ समझाने लगा। देर तक चमेली उससे पूछती रही। उसकी समझ में इतना ही आया कि खेलते-खेलते बसंता ने उसे मार दिया था।

बसंता ने कहा, "अम्मा! यह मुझे मारना चाहता था।"

"क्यों रे?" चमेली ने गूँगे की ओर देखकर कहा। वह इस समय भी नहीं भूली थी कि गूँगा कुछ सुन नहीं सकता। लेकिन गूँगा भाव-भंगिमा से समझ गया। उसने चमेली का हाथ पकड़ लिया। एक क्षण को चमेली को लगा जैसे उसी के पुत्र ने आज उसका हाथ पकड़ लिया था। एकाएक घृणा से उसने हाथ छुडा लिया। पुत्र के प्रति मंगल-कामना ने उसे ऐसा करने को मजबूर कर दिया।

कहीं उसका भी बेटा गूँगा होता तो वह भी ऐसे ही दुःख उठाता। वह कुछ भी नहीं सोच सकी। एक बार फिर गूँगे के प्रति हृदय में ममता भर आई। वह लौटकर चुल्हे पर जा बैठी, जिसमें अन्दर आग थी, लेकिन उसी आग से वह सब पका रहा था जिससे सबसे भयानक आग बुझती है - पेट की

आग, जिसके कारण आदमी गुलाम हो जाता है। उसे अनुभव हुआ कि गूँगे में बसंता से कहीं अधिक शारीरिक बल था। कभी भी गूंगे की भांति शक्ति से बसंता ने उसका हाथ नहीं पकड़ा था। लेकिन फिर भी गूंगे ने अपना उठा हाथ बसंता पर नहीं चलाया।

रोटी जल रही थी। झट से पलट दी। पक रही थी।... इसीसे बसंता बसंता है... गूंगा गूंगा है...

चमेली को विस्मय हुआ। गूंगा शायद यह समझता हे कि बसंता मालिक का बेटा है, उसपर वह हाथ नहीं चला सकता। मन ही मन थोड़ा विक्षोभ भी हुआ, किन्तु पुत्र की ममता ने इस विषय पर चादर डाल दी। और फिर याद आया, उसने उसका हाथ पकडा था। शायद इसीलिए कि उसे बसंता को दण्ड देना ही चाहिए, यह उसको अधिकार है...।

किन्तु वह तब समझ नहीं सकी, और उसने सुना, गूंगा कभी-कभी कराह उठता था। चमेली उठकर बाहर गई। कुछ सोचकर रसोई में लौट आई और रात की बासी रोटी लेकर निकली।

"गूँगे!" उसने पुकारा।

कान के न जाने किस पर्दे में कोई चेतना है कि गूँगा उसकी आवाज़ को कभी अवसुना नहीं कर सकता; वह आया। उसकी आँखों में पानी भरा था; जैसे उनमे

एक शिकायत थी, पक्षपात के प्रति तिरस्कार था। चमेली को लगा कि लड़का बहुत तेज़ है। बरबस ही उसके होंठों पर मुस्कान छा गई। कहा-"ले खा ले!" - और हाथ बढ़ा लिया।

गूंगा इस स्वर को, इस सबको उपेक्षा नहीं कर सकता। वह हँस पड़ा। अगर उसका रोना एक अजाब दर्दनाक आवाज़ था, तो यह हँसना और कुछ नहीं...। एक भयानक गुर्रहट-सी चमेली के कानों में बज उठी। उस अमानवीय स्वर को सुनकर वह भीतर ही भीतर कांप उठी, यह अपने क्या किया था? उसने एक पशु पाला था, जिसके ह्दय में मनुष्य की सी वेदना थी।

घृणा से विक्षुव्ध हाकर चमेली ने कहा, "क्यों रे, तू ने चोरी की है?"

गूंगा चुप हो गया। अपना सिर झुका लिया। चमेली एक बार क्रोध से कांप उठी, देर तक उसको और घूरती रही। सोचा - मारने से यह ठीक नहीं हो पकता। अपराध को स्वीकार कराके दण्ड न देना ही शायद कुछ असर करे। और फिर कौन मेरा अपना है। रहना हो तो ठीक से रहे, नहीं तो फिर जाकर सड़क पर कुत्ता की तरह जूठन पर जिन्दगी बिताए, दर-दर अपमानित और लांछित...

आगे बढ़कर गुंगे का हाथ पकड़ लिया और द्वार की ओर इशारा करके दिखाया-निकल जा!

गूंगा जैसे समझा नहीं। बडा-बड़ी आंखों को फाड़े देखता रहा। कुछ कहने को शायद एक बार होंठ भी खुले किन्तु कोई स्वर नहीं निकला। चमेली वैसी ही कठोर बनी रही। अब के मुंह से भी साथ-साथ - "जाओ निकल जाओ। ढंग में काम नहीं करना है तो तुम्हारा यहाँ कोई काम नहीं। नौकर को तरह रहना है रहो, नहीं बाहर जाओ। यहाँ तुम्हारे नखरे कोई नहीं उठा सकता। किसीको भी इतनी फ़ुर्सत नहीं है। समझे?"

और फिर चमेली आवेश में आकर चिल्ला उठी "मक्कार, बदमाश! पहले कहता था भीख नहीं मांगता, और सबसे भीख मांगता है। रोज़-रोज़ भाग जाता है, पत्ते चाटने की आदत पड़ गई है। कुत्ते की दुंम क्या कभी सीधी होगी? नहीं! नहीं रखना है हमें, जा तू इसी वक्त निकल जा..."

किन्तु वह क्षोभ, वह क्रोध, सब उसके सामने निष्फल हो गए, जैसे मन्दिर की मूर्ति कोई उत्तर नहीं देती, वैसे ही उसने भी कुछ नहीं कहा। केवल इतना समझ सका कि मालकिन नाराज़ है और निकल जाने को कह रही है। इसीपर उसे अचरज और अविश्वास तो रहा है।

चमेली अपने-आप लज्जित हो गई। कैसी मूर्ख है वह! बहरे से जाने क्या-क्या कह रही थी! वह क्या कुछ सुनता है?

हाथ पकड़कर ज़ोर से झटका दिया और उसे दरवाजे के बाहर धकेलकर निकाल दिया। गूंगा धीरे-धीरे चला गया। चमेली देखती रही।

करीब घंटे-भर बाद शकुन्तला और बसंता दोनों चिल्ला उठे-अम्मा! अम्मा!!

"क्या है?" चमेली ने ऊपर ही से पूछा।

"गूंगा..." बसंता ने कहा। किन्तु कहने के पहले ही नीचे उतरकर देखा - गूंगा खून से भीग रहा था। उसका सिर फट गया था। वह सड़क के लड़कों से पिटकर आया था, क्योंकि गूंगा होने के नाते वह उनसे दबाना नहीं चाहता था... दरवाजे की दहलीज़ पर सिर रख वह कुत्ते की तरह चिल्ला रहा था...

और चमेली चुपचाप देखती रही, देखती रही कि इस मूक अवसाद में युगों का हाहाकार भरकर गूंज रहा है।

और ये गूंगे... अनेक-अनेक हो संसार में भिन्न-भिन्न रूपों में छा गए है, जो कहना चाहते हैं पर कह नहीं पाते। जिनके हृदय की प्रतिहिंसा न्याय और

अन्याय को परखकर भी अत्याचार को चुनौती नहीं दे सकती, क्योंकि बोलने के लिए स्वर होकर भी - स्वर में अर्थ नहीं है, क्योंकि वे असमर्थ हैं।

और चमेली सोचती है आज दिन ऐसा कौन है जो गूंगा नहीं है। किसका ह्रदय समाज, राष्ट्र, धर्म और व्यक्ति के प्रति विद्वेष से, घृणा से नहीं छटपटाता, किन्तु फिर भी कृत्रिम सुख की छलना अपने जालों में उसे नहीं फांस देती - क्योंकि वह स्नेह चाहता है, समानता चाहता है।

कर्मवीर

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

देखकर बाधा विविध, वहु विध्न धबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।।

काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।

हो गये यक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले।।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते कहते जो कुछ कर दिखाते है वही।

मानते जी की हैं सुनते हैं सदा सब की कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही।।

भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे जिसे कर सकते नहीं।।

पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे।
सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।।

गर्भ में जलराशि के बेडा जला देते हैं वे
जंगलों में भी महामंगल रचा देते हैं वे।।

भेद नभतल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।
है उन्होंने ही निकाली तार की सारी क्रिया।।

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले फले।
बुद्धि, विद्या, धन विभव के हैं जहाँ डरे डले।।

वे बनाने से उन्हीं के बन गये इतने भले।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले।।

लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी।
देश की औ जाति की होगी भलाई भी तभी।।

मिटने का अधिकार

श्रीमती महादेवी वर्मा

वे मुस्काते फूल, नहीं -
जिनको आता है मुरझाना;
वे तारों के दीप, नहीं-
जिनको आता है बुझ जाना;

वे सूने से नयन, नहीं-
जिनमें बनते आँसू मोती;
वह प्राणों की सेज, नहीं-
जिसमें बेसुध पीड़ा सोती;

वे नीलम के मेघ, नहीं-
जिनको घुल जाने की चाह;
वह अनन्त ऋतुराज, नहीं
जिसने देखी जाने की राह;

ऐसा तेरा लोक, वेदना
नहीं, नहीं जिसमें अवसाद!
जलना जाना नहीं, नहीं
जिसने जाना मिटने का स्वाद!

क्या अमरों का लोक मिलेगा
तेरी करुणा का उपहार?
रहने दो हे देव! अरे
यह मेरा मिटने का अधिकार!

स्वदेश-प्रेम

रामनरेश त्रिपाठी

अतुलनीय जिनके प्रताप का
साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर,
घूम घूम कर देख चुका है
जिसकी निर्मल कीर्ति निशाकर,

देख चुके हैं जिनका वैभव
ये नभ के अनन्त तारागण,
अगणित बार सुन चुका है नभ
जिनका विजय-घोष रण-गर्जन,

शोभित है सर्वोच्च मुकुट से
जिनके दिव्य देश का मस्तक,
गूंज रही हैं सकल दिशाएँ
जिनके जय-गीतों से अब तक,

जिनकी महिमा का है अविरल
साक्षी सत्य-रूप हिम गिरिवर
उतरा करते थे विमान-दल
जिसके विस्तृत वक्षस्थल पर,

सागर निज छाती पर जिनके
अगणित अर्णपवोत उठाकर
पहुँचाया करता था प्रमुदित
भूमण्डल के सकल तटों पर,

नदियाँ जिनकी यश धारा-सी
बहती हैं अब भी निशि-वासर,
ढूँढो उनके चरण-चिह्न भी
पाओगे तुम इनके तट पर।

हे युवको! तुम उन्हीं पूर्वजों
के वंशज, उनके हो प्रतिनिधि।
तुम्हीं मान-रक्षक हो उनके
कीर्ति-तरंगिणियों के वारिधि।

रवि, शशि, उडुगन, गगन दिशाएँ
हैं गिरि, नदी-मेदिनी जब तक
निज पैतृक धन स्वतंत्रता को
क्या तुम तज सकते हो तब तक?

विषुवत रेखा का वासी जो
जीता है नित हाँफ-हाँफ कर
रखता है अनुराग अलौकिक
वह भी अपनी मातृभूमि पर।

ध्रुववासी जो हिम में, तम में
जी लेता है काँप-काँप कर
वह भी अपनी मातृभूमि पर
कर देता है प्राण निछावर।

तुम तो हे प्रिय बन्धु! स्वर्ग-सी
सुखद सकल विभवों की आकर
धरा-शिरोमणि मातृभूमि में
धन्य हुए हो जीवन पाकर।

तुम जिसका जल-अन्न ग्रहण कर
बड़े हुए लेकर जिसकी रज,
तन रहते कैसे तज दोगे?
उसके हे वीरों के वंशज!

जब तक साथ एक भी दम हो
हो अवशिष्ट एक भी धड़कन,
रखो आत्मगौरव से ऊँची
पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन।

एक बूँद भी रक्त शेष हो
जब तक मन में हे शत्रुंजय!
दीन वचन मुख से न उचारो
मानो नहीं मृत्यु का भी भय।

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का
मृत्यु एक है विश्राम-स्थल
जीव जहाँ से फिर चलता है
धारण कर नव जीवन-संबल।

गीत

जयशंकर प्रसाद

बीती विभावरी जाग री!

अंबर-पनघट में डुबो रही
तारा-घट ऊषा नागरी।
खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा
किसलय का अंचल डोल रहा।
लो यह लतिका भी भर लाई-
मधु मुकुल नवल रस गागरी।।

अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए।
तू अब तक सोई है आली!
आँखों में भरे विहाग री!

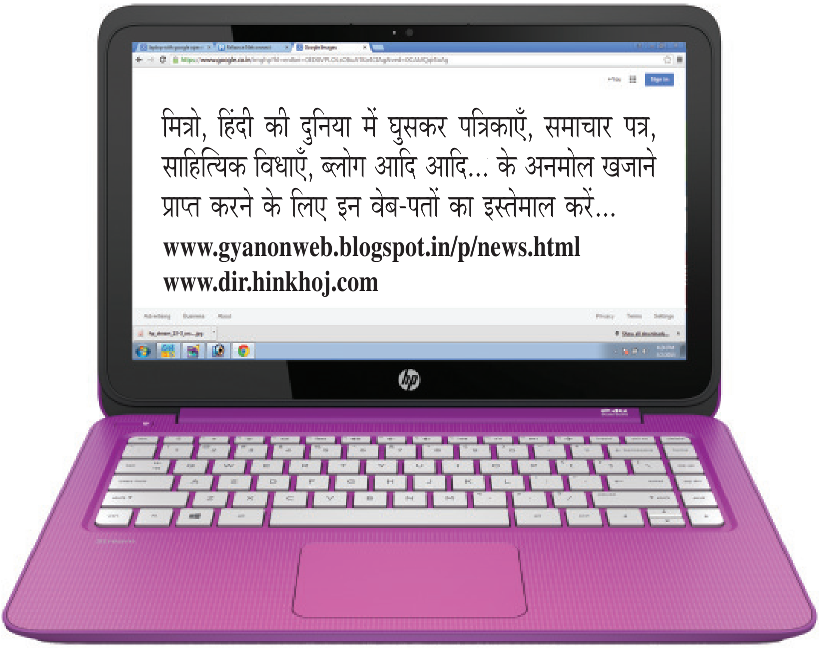
मित्रो, हिंदी की दुनिया में घुसकर पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, साहित्यिक विधाएँ, ब्लोग आदि आदि... के अनमोल खजाने प्राप्त करने के लिए इन वेब-पतों का इस्तेमाल करें...
www.gyanonweb.blogspot.in/p/news.html
www.dir.hinkhoj.com